निष्कलंक दल का इतिहास

साक्षात् नर रूप हरि गुरूमहाराज के चरण कमलों की वंदना करते हुए जिन्होंने श्री कल्कि भगवान् महाराज के चरणों तक पहुँचाया, श्री हनुमान जी से मिलाया, सच्चा रास्ता दिखाया, सत्य विश्वास दिया, शंकाएं मेंटी और जग दुर्लभ अनिर्वचनीय आनन्द दान किया, उन दुर्गादेवी के नीलकमल सम चरणों की वंदना करके जो मेरी पूर्व जन्म की उपास्य देवता हैं, सप्त ऋषियों को, सब लोकपालों को, सब देवताओं को और संसार भर के पतित पावन वैष्णव भक्तों को भक्ति पूर्वक वंदना करके दिल्ली के निष्कलंक दल का इतिहास लिखता हूँ।

भगवान निष्कलंक जी ने सबसे पहले अपने अवतार धारण करने के संकल्प को माननीय गुरुवर बालमुकुन्दजी पर प्रकट किया। भगवान ने उनको स्वप्न में आदेश दिया कि सतयुग सहित मेरे प्रकट करने को तपस्या करो। फिर क्या था, कल्कि भगवान की लीलाओं का स्त्रोत उनके दिव्य चक्षुओं के सम्मुख खुल गया और भक्ति का ऐसा नशा चढ़ा कि जंगलों में वृक्षों को कल्कि भगवान समझकर भेंटते हुए घूमने लगे। रात दिन यही रट लगाए रहते कि कल्कि भगवान आएंगे- कल्कि भगवान आएंगे।

यह घटना आज से लगभग 90 वर्ष पहले की है। श्री बालमुकुन्द जी का जन्म ठीक-ठीक किस तिथि या संवत् में हुआ था, उन्होंने कहाँ शिक्षा प्राप्त की, किस गुरु से भगवद्-भक्ति की दीक्षा मिली आदि बातों का अब कुछ पता नहीं चलता। उनके सम्बन्धियों से पूछताछ करने पर इतना मालूम हो सका है कि उनका मूल निवास स्थान और जन्म भूमि अलीगढ़ जिले का विलासपुर ग्राम था। बाद में वे देहली में आकर रहने लगे। सन् 1910 में जब उनके साथ मेरा परिचय हुआ, वे बाजार सीताराम, कूचा पातीराम, नई बस्ती की गली में रहते थे। उस समय उनकी अवस्था लगभग 50 वर्ष की जान पड़ती थी, स्त्री बच्चे कोई नहीं थे, माताजी जीवित थीं।

आप कल्कि भगवान की ही उपासना करते थे। पीतल की बनी भगवान की एक मूर्ति घोड़े पर सवार तलवार हाथ में लिए आपके घर में प्रतिष्ठित थी। नित्यप्रति नेम से रात को नौ बजे उसकी पूजा करते थे। आपके घर में एक नगाड़ा भी रखा था जिसे दोपहर को आप बजाते और यह भजन गाते थे:-

आवन आवन कह गए जी तुम कर गए कौल अनेक।
माधुरी मूरत मुख रेख सम्भल वाले आना हमारे देश।
देखत देखत बाट थारी म्हारे रूपा हो गए केश।
गिनत गिनत म्हारी घिसी अंगुरियों की रेख।
माधुरी मूरत लंबे केश सम्भल वाले आना हमारे देश।

उधर मथुरा-वृंदावन के इलाके में एक मुसलमान संस्कारी जीव जिनकी उम्र थोड़ी ही थी ब्राह्मणों के पास पूछते फिरते थे क्यों भाई तुम्हारे कितने अवतार हैं? जवाब मिला 'दस' फिर सवाल किया 'यह सब अवतार' हो चुके या कोई होना बाकी है। तब कहा गया कि एक कल्कि अवतार होना बाकी है। उस मुसलमान प्रेमी ने, जो बाद में अब्दुलशाह नाम के बड़े त्यागी और बेगर्ज़ फकीर हुए, मन में सोचा कि रामावतार के समय लोगों ने पहले राम की राह देखी, कृष्णावतार में कृष्ण की राह देखी, तो जब कल्कि अवतार होगा तो लोग उसकी भी राह देखेंगे। लाओ हम ही सबसे पहले इसे पकड़ें। बस कल्कि कल्कि की रट लगा दी। भगवान आत्मज्योति रूप से उस शरीर में शीघ्र प्रकट हो गए और स्वप्न में दर्शन देकर बोले कि दिल्ली क्यों नहीं जाता?

दिल्ली ही मेरा लीला स्थल

होगी। उनके पास पैसे भी नहीं थे, इससे पैदल ही दिल्ली के लिए रवाना हो गए और यहाँ पहुंचकर बालमुकुंद जी के प्यारे साथी बन गए। सन् 1914 में इन्हीं अब्दुलशाह से मेरा वार्तालाप हुआ। उन्होंने कहा बेटा कल्कि नाम की रट लगाते 36 वर्ष हो गए। जिस समय मैं प्रथम बार बालमुकुंद जी से मिला सब मिलाकर हम चार साथी थे। हम सब रात को दो बजे तक सड़कों पर टहलते हुए कल्कि भगवान की चर्चा करते रहते। आठ प्रहर चौंसठ घड़ी इसी ध्वनि में लगे रहते। उन्हीं दिनों स्वप्न में:-

बालमुकुन्द जी को महाविष्णु जी का आदेश

हुआ कि भाई हनुमान इस फूटे ब्रह्माण्ड का मैं महाविष्णु हूँ। अब मैं जागृत हुआ हूँ, तलवार संभाली है, दुनिया को देखूँगा और तुमसे मिलूंगा। स्वप्न में हम सबको अपने रामावतार के समय के नाम मालूम हो चुके थे। दो साल तक हम लोग शेखचिल्ली की तरह महाविष्णु जी के आने की राह देखते मारे-मारे फिरते रहे। आपस में रोज़ चर्चा कर लिया करते थे कि महाराज ने आने को कहा है, जरूर आएंगे। जमुना जी के किनारे घाट वालों से, बगीचियों में रहने वालों से और चारों तरफ दूसरे बहुत से लोगों से बालमुकुंद जी ने कह रखा था कि देखो भाई कोई फकीर हो, चाहे हिंदू हो या मुसलमान, पढ़ा लिखा हो या बेपढ़ा, ऊंच जात हो या नीच, खूबसूरत हो या बदसूरत, सुंदर भाषा में बोलता हो या गाली गलौज बकता हो, शुद्धताई से रहता हो या मैला भेष हो, कैसा भी क्यों न हो-अगर अवतार की बात कहता हो तो हमको जरूर खबर देना।

इस तरह दो साल तक आशा लगाते-लगाते एक ब्राह्मण शरीर और साधु भेष में महाविष्णु जी के आवेशावतार दिल्ली में पधारे। खबर पाकर हम सब मिलने गए तो महाराज जी ने हमको पूर्व जन्म के नामों ही से पुकारा इस जन्म के नाम नहीं लिए। दो

माह तक वह मूर्ति दर्शन देती रही उसके बाद विचरण करने चली गई।
महाविष्णु जी चलते समय यह भी कह गए थे कि प्रकट होने से पहले सवा लाख शरीरों में मेरा तेज व्याप्त होगा और एक ही वाणी बोलेगा। इसलिए जिन प्यारों पर ईश्वर की ऐसी कृपा हो उन्हें चाहिए कि जो लीला नारायण दिखा रहे हैं उसे देखते जाएं और भक्त के रूप में ही कल्कि भगवान का स्मरण करते रहें। ऐसा करने से उनका परम कल्याण होगा।
श्री बालमुकुन्द जी के साथियों से सुनने में आया कि पहले कभी आप कृष्ण रूप में भगवान की उपासना किया करते थे। कृष्ण का ध्यान करते करते स्वप्न में भगवान की आज्ञा मिली कि-
अब तुम मुझे कल्कि नाम से याद किया करो। अब संसार में मेरे कल्कि रूप की नई लीला फैलेगी। कलियुग को नाश करके सतयुग स्थापित करने का मेरा संकल्प है। तभी से आप भगवान के कल्कि रूप की पूजा तन्मयता के साथ करने लगे। लोगों ने आपको इस रास्ते से हटाने की बहुत कोशिश की पर आप तनिक भी विचलित नहीं हुए। आपने कभी इस बात की फिक्र नहीं की कि कौन मेरी सुन रहा है और कौन नहीं मान रहा है। सत्य विश्वास के मार्ग पर कौन टिक रहा है और कौन भाग रहा है और टिकने वाला टिके और भागने वाला भागे। आप बड़े बेगर्ज थे। आपकी आशा से भरी अभय वाणी ने सेवकों के अंत:करण का अंधकार फाड़ डाला और हृदय विश्वास से भर दिया। आपने केवल वचनों से नहीं अनुभव से दृष्टि के पट खोल दिए, यह प्रत्यक्ष सुझाव दिया कि कल्कि नाम से कलियुग कट कर

सतयुग आ जाएगा

और भगवान कल्कि प्रकट होंगे। इसी उपाय से वेदानुकूल भक्तिमार्ग की, जिससे निर्गुण और सगुण दोनों स्वरूपों के दर्शन होते हैं, रक्षा होगी। वेदों में भगवान के जिस रूप का वर्णन है उसको जानने का मार्ग भी केवल भक्ति ही है। विचार से केवल विचारा ही जा सकता है, अनुमान ही किया जा सकता है, प्रत्यक्ष दर्शन करने का उपाय तो शरणागत होकर भगवान की भक्ति करना ही है।
श्री बालमुकुंद जी कहा करते थे कि सारा जगत विष्णु द्रोही बन चुका है। प्राणियों को अधर्म की आदत ऐसी पड़ गई है जैसे मेहतर लोग बिष्ठा के ढेर के पास बैठ कर हुक्का पीते हैं और मैले से भरी गाड़ी पर गीत गाते चलते हैं और बदबू नहीं मालूम होती। यह सब जड़वाद (माद्दापरस्ती) का ही परिणाम है देखने में भी यही आ रहा है कि पृथ्वी ईश्वर से विमुख और एक दूसरे के -

खून के प्यासे

परपीड़क लोगों से भरी पड़ी है। जहाँ ये आदर्श था कि एक दूसरे को नारायण का स्वरूप समझ कर सेवा टहल करें, जैसा श्री रामचंद्र महाराज ने भी कहा है-मैं सेवक सचराचर, रूप-राशि भगवंत-वहां आजकल के लोग एक दूसरे को बर्बाद करने पर तुले बैठे हैं। यह चैतन्य को छोड़कर जड़ पर मोहित होने का ही नतीजा है। खैर पृथ्वी का यह भार तो उतरेगा ही।

कुछ समय पश्चात् भगवान ने स्वप्न में उनको आज्ञा दी कि हमारे अवतार लेने का ऐलान जगत में कर दो। इसके बाद से आप हनुमान जी की-सी गदा कंधे पर रखकर शाम के वक्त बाज़ारों में कल्कि भगवान का ऐलान करते घूमा करते थे। आपका ऐलान प्रायः इन शब्दों में हुआ करता थाः-

''सृष्टि! तू गौओं से द्रोह करना छोड़ दे वरना तुझे विनाशकारी महाभारत का सामना करना पड़ेगा, और धर्म तथा धन दोनों की हानि उठानी पड़ेगी। कल्कि भगवान महाराज गौओं की रक्षा के विरद के साथ घोर विध्वंसकारी रूप में आ रहे हैं। वे सत्युग की स्थापना करेंगे। पृथ्वी देवताओं के बसने के लिए खाली कराई जाएगी, सगुण ब्रहा कल्कि भगवान का झंडा लहराएगा-ब्रह्म बल का बोल बाला होगा-भक्त, भक्ति और भगवान ये तीन ही संसार में रहेंगे। जो लोग कल्कि देव नाम के नशे में चूर होंगे वे आत्मिक ऐश्वर्य से भरे पूरे होंगे। माद्दापरस्त कूड़ा करकट की तरह झाड़ू से बुहारे जाएंगे। इसलिए कल्कि भगवान के स्वागत और सम्मान के लिए कल्कि जी की शरण लो। कलियुग के कर्मों को त्याग कर सत्युग के आचरण ग्रहण करो, धर्म को धारण करो, अंदर व बाहर शुद्ध बनो। कल्कि भगवान के व्यापक स्वरूप की फैलाई लीलायें संसार में आंधी की तरह आवेंगी और धर्म का अपमान करने वाली दुनिया उनको बर्दाश्त न कर सकेगी।''

श्री बालमुकुंद जी को जो आज्ञाएं स्वप्न में, दिव्य दृष्टि से या अनुभव द्वारा कल्कि भगवान से प्राप्त होती थीं उन पर आप एक तनख्वाहदार नौकर की तरह बड़ी मुस्तैदी और सख्ती से अमल करते थे।

बालमुकुंद जी का कहना यह भी था कि भगवान महाराज के प्रकट होने के पहले हजारों ऐसे मिलेंगे जो यह कहेंगे कि हम ही कल्कि हैं। एक बात प्रायः यह भी देखने में आई है कि गुरूगिरी की कामना वालों को कल्कि भगवान के नाम से विशेष घबराहट पैदा होती है। ऐसे गुरू स्वयं भगवान बनकर वेदांत के दृष्टांत देकर अपने में ही शिष्यों की दृष्टि आकर्षित करते हैं। वे अपने चेलों को उपदेश देते हैं कि तन-मन-धन गुरू जी को ही अर्पण किया जाए। कल्कि भगवान के प्रकट होने पर यह सब-

नकली भगवान

खतरे में पड़ जाएंगे इसमें जरा भी संदेह नहीं। ऐसा भगवान बनने का शौक त्याग देना ही अच्छा है।

बालमुकुन्द जी अपने सेवकों के बीच में सदा एक भक्त के रूप में साथी और सखा बन कर ही रहे। आप जिंदगी के आखिरी दिन तक प्रकट होने वाले कल्कि भगवान की महिमा का प्रचार करने में ही लगे रहे, और अपने श्रद्धालुओं को भी लगाते रहे। उनके वचनों से कहीं पर यह प्रकट नहीं होता कि हम गुरु हैं, इसलिए हमारा दर्जा भगवान से बड़ा है- हमारा ही ध्यान करो-और हमें अपना तन मन धन दे दो। उन्होंने हमेशा यही कहा कि मन-बुद्धि-वाणी को कल्कि भगवान में लगाओ। ''दे पांडे आशीश, हम क्या देंगे हमारी आत्मा देगी'' ,वाली मिसाल के मुताबिक भगवान कल्कि देव के नाम से और ध्यान से जिस-जिस की आँखे खुलती गई, उस-उस की दृष्टि में वे अपने आप ही ''शिव स्वरूप भवहर भगवंता'' होते गए।

आज अनगिनत मनुष्य पृथ्वी पर श्री बालमुकुन्द जी और श्री कल्कि नाम के अहसानमंद मौजूद हैं जिनकी गर्दन हमेशा के लिए उनके चरणों में झुक गई है। जो लोग भूल से कल्कि अवतार के प्रमाणों की पुस्तकें ढूंढ रहे हैं वे अगर राम, कृष्ण के नाम की तरह 'कल्कि' नाम की रट लगा दें तो शीघ्र ही उनकी शंकाएं दूर हो जाएंगी और वे परम शांति प्राप्त कर सकेंगे। जीव का संदेह दूर करना तो भगवान के ही हाथ में है, जिन्होंने महाभारत के मैदान में अर्जुन का संदेह मिटाया, पर्वत की गुफा में राजा मुचकुन्द का संदेह दूर किया। यह भी कोई जरूरी नहीं कि हर एक आदमी यह मान ही ले कि भगवान कल्कि का अवतार हो गया-जो जानता जाएगा वो मानता जाएगा। कुछ भी क्यों न हो कल्कि भगवान का नाम उपेक्षा की दृष्टि से देखने योग्य नहीं है। प्रत्येक हिंदू के मन में कल्कि भगवान के नाम का खौफ (भय), अदब और प्रेम होना ही चाहिए। भगवान कल्कि भुवनवंद्य हैं और होंगे। भागवत् में अक्रूर जी ने कल्कि नाम की वंदना करते हुए कहा है:-

म्लेच्छ प्रायः क्षत्रहन्ते नमस्ते कल्कि रूपिणेः।

इसी प्रकार इन्द्र के पुरोहित विश्वरूप जी तथा स्वयं इन्द्र भगवान कल्कि की महिमा का गायन करते हुए कहते हैं-

कल्किः कलेः कालमलात् प्रपातु धर्मावना योरु कृतावतारः।

बंगाल के परमपूजनीय महात्मा श्री रामकृष्ण परमहंस समाधि से जागृत होते हुए कल्कि भगवान के विषय में कह गए हैं:-

''कलिर शेषे कल्कि अवतार हवे, से ब्राह्मणेर छेले से
आर किच्छुई जानेना, हठात् घोड़ा आर तवरार आसिबे''-

अर्थात् ''कलियुग के समाप्त होने पर कल्कि अवतार होगा। वह ब्राह्मण का पुत्र होगा जो

और कुछ भी जानता न होगा, बस एकाएक घोड़ा और तलवार आ जाएगी।'' जिन भाईयों को शंका हो वे इन वाक्यों को मास्टर रामसिंह विरचित ''श्री रामकृष्ण कथामृत'' के चतुर्थ खण्ड में अपनी आँखो से देख सकते हैं।

जो भाग्यशाली प्राणी भगवान् कल्कि का नाम शुद्ध अंतःकरण से रटेंगे उनको कल्कि नाम की महिमा का अनुभव होने लगेगा। फिर उनके लिए किसी चेतावनी, पुस्तक या प्रमाण की आवश्यकता न होगी। श्री बालमुकुन्द जी की आज्ञा थी कि चूंकि सतयुग आगे आ रहा है जो पाप के कामों को बर्दाश्त नहीं करेगा, यह समय तलवार की धार की तरह तीक्ष्ण होगा; इसलिए सत्कर्म के अभ्यासी जीवों को अभी से सावधान हो जाना चाहिए। सब प्रकार के कपट के काम, मिलावट के काम त्याग देने चाहिए। चर्बी लगे विदेशी वस्त्र त्याग कर स्वदेशी वस्त्र या शुद्ध खद्दर धारण करना चाहिए, मद्य मांस का त्याग कर सदाचार पूर्ण जीवन व्यतीत करना चाहिए। अपनी प्राचीन सभ्यता का सम्मान करना चाहिए और खान-पान, वेश भूषा, रहन-सहन को सुधारना चाहिए।

जो जीव चार-चार युग से भक्ति करते आ रहे हैं और इस युग में भी पक्के बने रहेंगे वे ही अंत में पक्के माने जाएंगे। शेष लोग निकाल बाहर फेंके जाएंगे। जो कलियुगी प्राणीः-

कृष्ण बनकर

या झूठ-मूठ कोई महान् अवतार होने का ढोंग रचकर भगवान् का उपहास कर रहे हैं, भगवान् के नाम में अश्रद्धा के कारण बने हुए हैं उनको तो बहुत ही सतर्क होने की जरूरत है; यह बगावत ज्यादा दिन तक नही चल सकेगी।

अब उद्धार का मार्ग केवल भगवत्-भजन ही है। जो लोग कल्कि नाम के अहसानमंद बन चुके हैं और अब भी सच्चे मन से कल्कि भगवान की चर्चा करते हैं उनको तो हमारा भूमिष्ठ होकर प्रणाम है और जो लोग उपहास से या कपट से भी कल्कि का नाम ले रहे हैं उनको भी 'कल्कि' नाम के गौरव के कारण हमारा प्रणाम है। अब तो बसः-

शांत भयानक रौद्र रुख, धरे वीरवर वेष।
अघ-तम काटन हित मुदित, कल्कि उदित दिनेश॥
नयन ज्वाल फरकत अधर, कर चमकत तलवार।
कलि काटन कल्कि चले, हो घोड़े असवार॥

आत्म कथा आंशिक

श्री गुरूवर बालमुकुंद जी

सारी पृथ्वी पर्यन्त के दुष्ट असुरों के बीज नाश के संकल्प से कल्कि भगवान से प्रार्थना पृथ्वी के भार उतारने के लिए स्वयं करते थे और शिष्यों से भी कराते थे। उनके ही शिष्य ये शिवशंकर जी महाराज मुझ से मिले क्योंकि उसी समय में उनको भी स्वप्न में प्रभु ने मेरे उद्धार के लिए काम सौंपा। उन्होंने स्वप्न की आज्ञा का पालन करते हुए कई आदमी मेरे पीछे लगाए। जो मुझको समझाने की चेष्टा करने लगे कि रामायण भागवत् और उनमें वर्णित अवतार और ये सब भक्त भक्ति भगवान की लीलाएं सब सत्य हैं और अब भी इस धर्म की रक्षा के लिए गीता में किए अपने वायदे के अनुसार कि:-

यदा यदा कि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्
धर्म संस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे॥

उन्होंने कल्कि अवतार ले लिया है। आप उनका भजन किया करें। संवाद बड़ा सुंदर था, मन भी विश्वास करने को अमल करने को चाहता था परंतु उन सबके किसी के वश में मैं नहीं आया क्योंकि बहकाने वालों की भी कमी न थी। जो स्वयं विश्वास न करना चाहते थे और न करने देना चाहते थे। वह सब थे तो बढ़िया सच्चे त्यागी साथी परंतु मेरे लिए आगे चलकर उपयोगी होने के बजाये बढ़िया विघ्न थे।

आखिर में गुरु महाराज स्वयं सामने आये और जहां भगवान बाहर गुरु रूप से उद्धार कर रहे थे वहां अंदर विराजकर जैसे उत्तरा के गर्भ में परीक्षित की रक्षा करी थी ठीक उसी प्रकार मेरे काम आए। मन में विघ्नकारियों की चाहे वह कैसे ही प्यारे व सम्मान के योग्य थे एक न सुनी। कल्कि भगवान का नाम रास्ते चलते मुझे दिया गया व मन ने बड़े प्रेम, आदर, आशा व उत्साह सहित यह समझकर ग्रहण किया कि मानने में लाभ है। विघ्न सब पराजित हुए और मंत्र के साथ ही साथ गुरुमहाराज ने वरदान व आाशीर्वाद भी दिया कि इसके जपने से तुम भारत के व हिंदू धर्म के शत्रुओं का सामूहिक संहार व उन पर मार पड़ती हुई देखोगे।

सन् 1910 से 1915 तक उनका साथ रहा इस अर्से में उन्होंने भक्ति भाव के पोषण में बड़ी सहायता की। सन् 1915 के समीप में बनारस षड़यंत्र में जेल चला गया वहां जाकर जेल

की कोठरी में उनके बताए मार्ग में मन को लगाने की चेष्टा करता रहा। जिसमें भक्त वत्सल शरणागत वत्सल, महाप्रेमी, महादयावान व दुष्ट असुरों के लिए महाकराल श्री कल्कि भगवान महाराज ने दर्शन देकर सफलता प्रदान करी और कल्कि नाम के उच्चारण से कलियुग की कटाई में जो काम हो रहा है वह दिखाया, धीरज दिया, प्रेम दिया, उत्साह दिया, प्रकाश देकर मार्ग प्रशस्त किया असंख्यों अनुभव अवतार के काम के दिए पूर्व जन्म का नाम बताया और उस जन्म के कार्यक्रम से इस जन्म के कार्यक्रम को जोड़ दिया और बताया अंग्रेजी माया जिसे अंग्रेजी सभ्यता के नाम से कलियुग के प्रेमी लोग पुकारते हैं उसका अंत करूंगा। मेरा ध्यान करके ही और मेरे अवतार के कार्यक्रम में ही मन बुद्धि वाणी व करणी को बांधकर ही मेरे कीर्तनों को करने से भक्तों का उद्धार होगा। मेरे कीर्तन से मेरे नाम के उच्चारण से आसुरी सभ्यता पर दानवता पर प्रहार होगा और संहार होगा एक साथ ही भारत का हिंदू जाति का, हिंदी भाषा का व भारत खण्ड का भी उद्धार होगा। जब नई आशा व भगवान की नई लीला की उत्साह भरी भविष्यवाणी मिली सबसे कहने सुनाने चर्चा करने लगे। पिता ने विश्वास व अविश्वास दोनों के संगम में खड़े होकर कल्कि भगवान को सिर झुकाया। माता ने पिता की अपेक्षा अधिक विश्वास किया। दुर्गा की पूजा जो साल में प्रत्येक छमाही में दो बार होती है, मुझे बड़ी प्रिय लगती थी। माँ का विश्वास पूजा पाठ धर्म कर्म में अत्याधिक था।

विवाह माता पिता ने 11 साल की आयु में, 9 साल की लड़की के साथ कर दिया। लड़की कुछ पढ़ी-लिखी नहीं थी। आजकल की तरह लड़के लड़कियों को जिस प्रकार देखकर या छविचित्र देखकर विवाह करते हैं उस प्रकार का रिवाज़ नहीं था। माता-पिता ने जैसा भला विचारा, कर दिया। माँ का स्वभाव अत्यंत कठोर था। सारे घर का धंधा कराते हुए भी उस पर गर्जन तर्जन करती रहती थी। चार बातें उसके साथ में मुझे भी सुना देती थीं क्योंकि मैं कमाना नहीं जानता था। इधर क्रांतिकारी दल में भर्ती होने के कारण स्त्री की तरफ से एकदम उदासीन था। माँ को स्त्री की तरफ से जवाब देना मैं सहन नहीं कर सकता था। पहले कई दफा त्रासना देने के उपरांत मन में सोचा जब स्त्री को तुमसे कोई सुख नहीं है तो दुख भी तुम्हारे स्वभाव की वजह से नहीं होना चाहिए। यह सोचकर हाथ खींच लिया उस पर मुझे और भी सुनने को मिली कि दोनों एक हो गए। माता की सखी ने मेरी स्त्री को तपस्विनी बना दिया।

इधर बिना पढ़ी लिखी होते हुए भी मेरा भय सन्मान व प्रेम उस देवी के मन में घर करे हुए था वह मुझको नाराज या उदास नहीं देख सकती थी। एक बार पांव दबाते दबाते स्त्री ने प्रश्न किया कि तुम मेरे से नाराज तो नहीं, मैंने जवाब दिया कि मैं तुम पर बड़ा प्रसन्न हूँ

बिल्कुल नाराज नहीं खाली मेरी माँ को उलट कर कभी जवाब मत देना। उसने कहा कि मैं तो कुछ भी नहीं कहती हूँ वही मेरे को दिन रात अनेक प्रकार की बातें कहती रहती हैं तब मैंने समझाया कि वह तो तुमसे कहेंगी और मुझसे भी जो मन में आवे कहेगी, तुम भी सुनो मैं भी सुनूंगा वह मेरी माँ है उसने 9 महीने पेट में रक्खा है। उसने उसी पर मेरे प्रेम के कारण बड़ी प्रसन्नता से अमल किया। मैं उससे दूर ही रहा करता था कि कहीं प्रेम न बढ़ जाए तो फांसी के समय मन में रोड़ा अटकावे। इस प्रकार मेरे प्रेम न करते हुए भी उस प्राचीनता की मूर्ति ने मुझसे प्रेम रक्खा और अपने तपोमय जीवन में गर्व अनुभव किया।

इधर अंदर कल्कि नाम का जप पूजन चलता रहा। बाहर क्रांतिकारी दल का काम चलता रहा। 3 दफा मकान की तलाशी हुई 3 बार गिरफ्तारी हुई पिता के साथ मनमुटाव चलने लगा, कहने लगे काशी, मथुरा चारों धामों में बड़े-बड़े विद्वान पंडित पड़े हैं कोई और तो कल्कि अवतार के बारे में कुछ कहता नहीं तेरे ही घर में अवतार हुआ है। कई बार मार भी लगाई झगड़ा झंझट भी चलता रहा। इधर सन् 1910 से जब से गुरू महाराज ने कल्कि का मंत्र दिया और कहा, इस अवतार का 12 टोपी अंग्रेजों से बैर है, ये लोग धर्म के व गौओं के शत्रु हैं, उसी समय से अंग्रेजी की पढ़ाई छोड़कर संस्कृत का पढ़ना लाला हरदयाल एम.ए. के साथी मास्टर चिरंजी लाल एम.ए. व गोविंद जी एम.ए. जो बाद में अमरीका में जर्नलिस्ट हो गए उनसे छुपे-छुपे संस्कृत पढ़ता रहा। बाद में संस्कृत में बनवारी लाल आयुर्वेद विद्यालय से वैद्यक की परीक्षा पास करके सन् 12 से 13 तक दो साल वैद्यवर की पढ़ाई पढ़ता रहा। मैंने अपने जीवन में बढ़िया ध्येय कल्कि नाम व कल्कि भक्ति को माना उससे उतर कर विद्या, उससे उतरकर शारीरिक उन्नति तीनों काम साथ साथ चलते रहे कसरत 500 दंड, 1300 बैठक, दौड़, कुश्ती, बाल्मीकि रामायण, दैवी भागवत्, महाभारत का व आयुर्वेद शास्त्र का अध्ययन भी साथ साथ चलता रहा, सबसे ऊपर राज राजेश्वर श्री कल्कि महाराज का ब्रह्मानन्द दायक म्लेच्छ निधनकारी नाम। पिताजी झगड़ते बेटा मेरे घर में तप करने की जगह नहीं तप करना है तो वन में जाओ। मेरे समय की विपरीतता जो ऐसे निष्ठावान ब्रह्मदर्शी ऋषि होते हुए भी मेरे पिता मुझको समझ न पाए। परिस्थिति अत्यंत असह्य हो चुकी थी देखते-देखते वह आनंददायी काल आन उपस्थित हुआ। पुलिस वाले हाथ में हथकड़ी डाल कर ले चले पिताजी घबराए हुए आए। कई कारणों से मैंने खूब सोच विचार कर बड़े दिल को फाड़ने वाले शब्द उनसे कहे क्योंकि वह उतने भोले भाले थे कि यदि कोई पुलिस कर्मचारी उन्हें यह आशा लगाकर कि मैं तुम्हारे लड़के को छुड़ा दूंगा रू 500/-मुझे दे दो तो वे फौरन दे देते। ये विचारते ही

उनकी शक्ल देखते ही मैं बोल उठा, मैं गिरफ्तार हो गया हूँ, मेरे छुड़ाने के लिए यदि एक पैसा भी खर्च करें तो आपको गौ मारे की हत्या हो। आप मुझसे कहा करते थे कि बेटा मेरे घर तप करने की जगह नहीं है सो भगवान ने मुझे तप करने की जगह दे दी है। मेरा अंग्रेज से बैर है, अंग्रेज ने मेरी गऊएं खाई हैं इसलिए मैं अपने ख्यालात के लिए दुख बर्दाश्त करूंगा। मैं नहीं चाहता कि आप मेरे लिए बर्बाद हो जाएं। यह कहकर मैं जेल चला गया।

जेल जीवन

गिरफ्तार होकर सोचा लोग साधु सन्यासी होकर माँ, बाप, भाई, बहिन छोड़ कर चले जाते हैं। तुम्हारा यह बानक अपने आप बन गया। साथ ही एक महापुरुष जिनका नाम शादीराम जी था। जन्म के क्षत्रिय थे बालमुकुन्द जी के शिष्य थे। कल्कि भगवान जी का पूजन जप बड़ी लवलीनता के साथ कर रहे थे। कई जन्मों का उनको ज्ञान था। सीता जिस प्रकार राम का ध्यान करें या भगवती भवानी जैसे प्रेम व निष्ठा से शिव का ध्यान करें। इस भाव से तन्मय होकर भगवान का भजन करते थे। पहले मैं बचपन के अज्ञानवश उनको बहुत समय तक समझ न सका। आर्य समाजी मित्रों के संग के कुप्रभाव से उनका वह सम्मान न कर सका जैसे करना चाहिए था परंतु फिर भी वह उस उद्दण्डता की ओर ध्यान न देकर मुझसे प्रेम करते रहे और मेरे उद्धार को ही अपना ध्येय बनाए रहे। भगवान की कृपा से उनकी मेरी घनिष्ठ मित्रता हो गई। वह मुझे भैया कहते थे। मैं उनसे भैया कहने लगा। जब उनके संपर्क में आया और समीप से उनकी दिनचर्या व जीवन का अध्ययन किया तो ऐसा प्रतीत हुआ कि भक्ति किस प्रकार की जाती है। उसकी शिक्षा देने के लिए ही मानो भगवान अनिरुद्ध जी ने पृथ्वी पर शरीर धारण किया है, जो भगवान के मन के अवतार थे। प्रातः चार बजे ब्रह्म मुहूर्त्त में उठना स्नान कर ठाकुरों को स्नान करना। जिनमें राधा गोविंद जी की विग्रह जो वंशीधारी थे व सत्यनारायण की शिला व कल्कि भगवान का जयपुर का हाथ बना चित्र, गणेश, शिव आदि अनेक देवी देवताओं की प्रतिमाओं सहित स्नान के उपरांत भोग, आरती के पश्चात् छह घंटे या साढ़े छह घंटे कल्कि भगवान का जप, एक आसन पर इसी प्रकार सायंकाल 8 से11 तक नित्य नियम था। सबसे पहले जब मुझे अपने घर ले गए तो अलमारी खोलकर पूजा का स्थान दिखाकर कहा, ये देखो हमारे ठाकुर जी हैं जैसे कोई अपना हृदय सर्वस्व दिखा रहा हो। रामायण, भागवत् और कल्कि पुराण ये तीन उनके अध्ययन के मुख्य ग्रंथ थे। उन्होंने जब उनको अपने धराधाम से जाने का ज्ञान जो उनको शरीर त्याग से नहीं मालूम कितने दिन पहले लग चुका था। मुझे उन्होंने केवल 10 दिन पहले बताया अच्छी तरह दुकान पर बैठे-बैठे पूछा, कितनी माला

रोज कर रहे हो? मैंने उत्तर दिया पाँच, सुनकर बोले बढ़ाओ कम से कम 2 या 3 घंटे जप किया करो। मैंने उत्तर दिया चलते फिरते जप कर सकता हूँ। बैठकर मन नहीं लगता उस पर उन्होंने समझाया कि मन लगे या न लगे कल्कि भगवान के निमित्त संकल्प करके खाली बैठे रहो मानो, हमारी बात को पीछे याद करोगे हम जा रहे हैं। जब मैंने पूछा आप कहाँ जा रहे हैं तो कहा महाराज कल्कि भगवान का राज्य सिंहासन दूसरे शरीर से देख लेंगे। तुमसे वियोग हो रहा है इसका जरा ख्याल है। दो दिन बाद मंगल के दिन कल्कि भगवान की पूजा करी विशेष समारोह से, फूल मंडी से फूल लाए, मालाएं पिरोई अपने हाथ से और मुझसे भी पिरवाईं। एक छोटा सा भक्त मंडली का भंडारा खीर पूरी से किया। भगवान पर पुष्पांजलि दी, गले मिले मैं उस समय समझ न सका कि ये आखिरी गले मिला जा रहा है। सुबह गले मिले शाम को तेज बुखार होकर अगले मंगल को भगवान के चित्र को 3 बार छाती से लगाकर हाथ जोड़कर धराधाम से प्रस्थान कर गए। बाद को पता लगा कि अपनी धर्मपत्नी को भी जिनकी आयु उस समय बीस साल की थी कई दिन पहले से शिक्षा भगवद् भक्ति की दे रहे थे कि तुम महाराज का चित्र लेकर ऋषिकेश चली जाना। संसारी मनुष्यों में न बैठना। जब 25 वर्ष की आयु में वह परलोक-गामी हुए, तब उनकी धर्मपत्नी ने जिनका नाम आज रूक्मणी बाई है, जिनकी आयु आज 1951 में 60 साल के करीब है, जिनका निवास स्थान इस समय ऋषिकेश है, जहाँ उन्हीं के नाम की रूक्मणी बाई दिल्ली वाली की धर्मशाला विख्यात है। जब मैं जेल सन् 1914 में गया उन्हीं के शब्द याद आए उसी के अनुसार चलने की चेष्टा की जिससे कि वह आनंद भगवत् प्राप्ति रूप हुआ जिसके बारे में रामायण जी में लिखा है--

शुक सनकादिक सिद्ध मुनि जोगी।
नाम प्रसाद ब्रह्म सुख भोगी॥

इसके अतिरिक्त कल्कि भगवान महाराज ने बड़े सुंदर-सुंदर रूपों से दर्शन देना, प्रेम विश्वास देना प्रारंभ किया जिससे भगवान के जप ध्यान प्रणाम का प्रभाव हृदय पर प्रकट हुआ। जेल में पहुँचते ही बनारस कांस्पिरेसी केस के सब साथियों से कहना प्रारंभ कर दिया। जिनके नाम यह है।

1. गणेशी लाल खत्ता महरौली 2. जितेन्द्र नाथ सान्याल 3. रवीन्द्रनाथ सान्याल 4. शचीन्द्र नाथ सान्याल 5. प्रताप सिंह 6. सुरेन्द्र बनर्जी 7. कालीपद मुकर्जी 8. अन्नदा भट्टाचार्य 9. नगेन्द्र नाथ दत्त 10. बंकिमचंद्र मित्र 11. जितेंद्र नाथ राय 12. दामोदर स्वरूप सेठ बरेली 13. सुशील चंद्र लायड़ी 14. यदुनाथ चौहान 15. धर्म सिंह राठौर- कि खाली मत रहो कल्कि कल्कि करो कल्कि कल्कि करने से जीवन का उद्देश्य पूरा होता है, कल्कि नाम के उच्चारण से भारत स्वतंत्र होगा। कलियुग के स्तंभ स्वरूप गौ घातक व गोविंद के

अपमानकारी असुरों पर मार पड़ेगी। कल्कि भगवान की म्लेच्छ विध्वंसकारी लीला प्रकट होगी। शुरू शुरू में साथी लोग हंसी उड़ाते रहे बाद में सब आपस में एक दूसरे को समझाने लगे कि उनसे कुछ मत कहो, उनको उनके हाल पर छोड़ दो। धीरे-धीरे साथियों का मेरे ध्येय में श्रद्धा, प्रेम, सम्मान बढ़ने लगा। बंकिमचंद्र मित्र को जो बांकीपुर के थे दो अनुभव हुए।

शिष्य भगवान ने दो बनाए 1. जितेंद्र नाथ सान्याल जिनकी जेल में आने के समय आयु 17 साल की थी। दो साल पहले स्वप्न में दक्षिणेश्वर के रामकृष्ण परमहंस ने उनसे कहा कि ऐ यहाँ आओ, मंत्र तुम्हें हम देंगे। जेल में आकर उन्होंने रोकर भगवान से प्रार्थना की कि भगवान मुझे गुरु दीजिए मेरा मन योग व भजन में नहीं लगता और बिना गुरु के गति नहीं मेरे तो गुरू भी नहीं, प्रार्थना करने के दो या तीन दिन बाद ही मैं बनारस की जेल के उसी बारक में जहाँ वह बंद थे, मैं भी बंद किया गया। जब उनसे मुलाकात हुई और मैंने कहा कि यहाँ भी भगवान का काम करो खाली न रहो कल्कि कल्कि करो तो शुरू में उनको मालूम हुआ कि कोई पागल तो नहीं है जब 5 या 7 दिन बाद उनके बड़े भाई शचीन्द्र नाथ सान्याल लाहौर के केस से सबूत न होने की वजह से खाली बनारस केस की वजह से बनारस जेल लाए गए उन्होंने आते ही भंडाफोड़ दिया कि जितेन्द्र, यह हमारे परम मित्र हैं। ये कहते हैं कि जैसे रामावतार, कृष्णावतार, रावण व कंस को मारने के लिए क्रम से हुए इसी प्रकार सारी पृथ्वी का भार उतारने के लिए गोविंद की बांधी मर्यादा की रक्षा के लिए गौ-ब्राह्मण की रक्षा के लिए श्री कल्कि भगवान का अवतार हुआ है और हम लोग जो काम कर रहे हैं वह भी अवतार के काम का एक हिस्सा है। इनको भगवान के स्वप्न होते हैं और इनको कल्कि भगवान ने स्वप्न में अगले जन्म का रामकृष्ण परमहंस बताया है। अपने भाई के बताए हुए इस भेद को जानकर और दो साल पहले के अपने स्वप्न का ध्यान करके कि मंत्र का वायदा मुझसे परमहंस देव ने कर रक्खा है। उसको निश्चय हो गया कि भगवान की कृपा से वह वायदा पूरा हुआ। उसकी नाम, जाप में रुचि व प्रवृत्ति हो गई। प्रेम, श्रद्धा, सम्मान के साथ कल्कि कल्कि कहता रहा। जब तक मुकदमा चलता रहा हम एक साथ रहे जब मुकदमे का ड्राप सीन हुआ। 2 साल के लिए जितेन बाबू व 5 साल के लिए मुझे बंदी बनाया गया। तब दो-दो साथी भारत की विभिन्न जेलों में गले मिल-मिल कर चले गए। मेरे हिस्से में जो दूसरे साथी आए वह थे जितेंद्र नाथ सान्याल लखनऊ जेल में हम दोनों आए और साथ- साथ कल्कि भगवान के नाम का आस्वादन लेते रहे। यहीं आकर जितेंद्र नाथ राय बारीसाल वाले मुझे मिले जिन्होंने मेरे एक बार के कहते ही बड़ी श्रद्धा से कल्कि नाम जपना शुरु कर दिया जिनको एक अनुभव भी भगवान ने दिया। ये

मुझे लखनऊ जेल में दो साल बाद मिले। जब उन्होंने सुना कि कोई हमारे साथी एक ऐसे भी हैं जो कल्कि अवतार की बात करते हैं तब दूसरी बारक में बंद होने की वजह से मिल नहीं सकते थे। अपने ऊपर लगे हुए पहरेदार जो कि वह भी एक मुसलमान कैदी था कहा कि हमको मिला दे तेरी बड़ी कृपा होगी वह बोला किसी ने देख लिया तो मुझे सजा हो जाएगी, डंडा पेटी छिन जाएगी पक्कागिरी हट जाएगी। तब तो जितेंद्र राय ने कहा हम हमारी मिलाई में रुपया आवेगा उससे जेलर को रिश्वत देने के लिए तुझे रुपया दे देंगे। उन दिनों जेलर जो एक यूरोपियन थे रिश्वत लेकर सब कुछ ज्यूं का त्यूं बहाल कर देते थे। तब तो अब्दुल मियाँ राजी हो गए बोले, एक तरह से मिला सकता हूँ कूड़े का कनस्तर सिर पर रख कर तुम मेरे आगे-आगे चलो पीछे-पीछे मैं चलूं जिससे देखने वालों को शक न हो। समझेंगे किसी कैदी से काम ले रहा है। राय बाबू भी राजी हो गए इस प्रकार वह सच्चे प्रेमी पहले पहल मुझसे मिले बाद में भगवान की प्रेरणा से मैं भी उसी बारक में पहुंच गया जहाँ वह बंद थे तीन महीने मेरा उनका साथ रहा। उनके जाने के बाद अमीनाबाद शूटिंग केस के श्रीयुत सुशील चंद्र लायड़ी मिले। ये बड़ी सच्ची आत्मा के सर्वत्यागी पुरुष थे। रासबिहारी बोस के विश्वासपात्र बड़े दर्जे के मित्र थे। जितेन्द्र नाथ सान्याल के मामा थे। पक्के क्रांतिकारी थे। पहले पहल जब जेल में आए थे तो मुझ पर बरस पड़े बड़े जोर का वाद विवाद किया। मेरे मन में क्रांतिकारियों का सम्मान रहता था हँसता हँसता सुनता रहा। मुझ पर छा गए कहने लगे आप सब हम लोगों को अकर्मण्य बना रहे हैं। बम कौन बनाएगा, जेल कौन जाएगा, फाँसी पर कौन लटकेगा, तुम्हारी बात मानकर सब काम छोड़कर हाथ पर हाथ धर कर बैठे रहेंगे और कहेंगे कि हमें देश के जिए काम करने की त्याग व बलिदान करने की क्या आवश्यकता है कल्कि भगवान ने अवतार तो ले ही लिया है सब काम वे ही स्वयं कर लेंगे। आप गलत रास्ते पर सब को ले जा रहे हैं उनकी बात सुनकर मैंने उनसे हँसते ही हँसते प्रेमपूर्वक कहा, देखिए आप मेरे बड़े हैं परंतु इस विषय में मैं आपसे नहीं दबूँगा क्योंकि मेरी बात सत्य है। विद्या आप में बहुत है, बहस वाद विवाद में संभव है कि आप मुझे 6 बार हरा दें परंतु मैं अपने काम को नहीं छोडूंगा, क्योंकि मुझे अनुभव प्रत्यक्ष हो चुका है जो काम आप बम बना कर फाँसी चढ़ कर करना चाहते हैं वही काम इससे भी होता है इसलिए यहाँ आपके मार्ग का कौन सा काम हो सकता है कैदी बन के खाली पड़े पड़े कोई काम होने वाला नहीं कल्कि कल्कि करने से भगवान के दर्शन होंगे पृथ्वी का भार उतरेगा जो दैवी शक्ति के ही बस का है, मानुषी शक्ति के बस का नहीं। इस पर उन्होंने प्रश्न किया कि किस प्रकार ये भारत की स्वतंत्रता होगी? हमारा रिवोल्यूशनरी काम सफल होगा या नहीं? इसके उत्तर में मेरे मुंह से शब्द निकले तुम्हारा

काम सुफल होगा या नहीं यह तो मुझे मालूम नहीं। नहीं मालूम पलटनें जमीन फाड़कर निकलेंगी या आसमान से गिरेंगी या दिवालों में से निकलेंगी परंतु यह जानता हूँ कि यह काम होगा अवश्य। यहां जेल में मुझे और मैं तो यह कहूंगा आपको भी खाली नहीं रहना चाहिए। कल्कि नाम का साधन करना चाहिए क्योंकि यह मेरा गुरु कृपा से जाना हुआ है कि इससे भारतवर्ष का अपमान करने वाले भारत के और धर्म के शत्रुओं का नाश अवश्यम्भावी है इस पर वह सहमत हो गए कल्कि नाम को सावधानी से ग्रहण करके बड़ी सच्ची तन्मयता से लगे कि उससे आगे कोई उन जैसा दिखाई न दिया। 8 या 10 दिन की रटन से भगवान के भक्तों को आगे बढ़ाने वाली शक्ति के दर्शन हुए और ईश्वर से जीव के मिलने के मार्ग में बाधा डालने वाली माया देवी के भी दर्शन हुए, जिससे यह सब जीव मोहित हो रहते हैं जिसका दर्शन नारद जी के बताए मार्ग पर चलकर वेद व्यास जी को हुए थे। आठ दिन के उपरांत उनका प्रेम व श्रद्धा असीम बढ़ गए। हाथ पकड़कर बैठ गए और बोले आज से आप अपनी कोठरी में झाड़ू नहीं लगाएंगे, मैं लगाऊँगा मेरा हक है। लगोंटी आपकी व तसला कटोरी सत्ता (जो एक कैदी था,) नहीं धोएगा, मांजेगा वरन् मैं माजूंगा। अपने भोजन के उपरांत अपनी झूठन का एक ग्रास हमारे लिए आप छोड़ दिया करना इत्यादि परंतु मैं उनको अपना बड़ा मानता था मैंने ऐसा कोई मौका आने नहीं दिया। कई महीने उनके साथ सुंदर सत्संग रहा। सब जगत जिन काल भगवान की आधीनता में है उनकी इच्छा से वह आनंद ज्यादा नहीं रहा। उनका बलिदान भगवान को कराना था। लखनऊ जेल में फाँसी का परवाना सुनकर फर्रूखाबाद जेल को वह चले गए। चलते समय मेरे पड़ौस की कोठरी में बंद होने वाले कैदी के हाथ 1 कटोरी जो उनके लिए लुहारखाने के एक प्रेमी ने उपहार स्वरूप बनाकर भेंट करी थी वह भेज दी व नमस्कार व जय श्री कल्कि भगवान कहला भेजी और वह हृदयग्राही अंतिम शब्द कह गए जो मुझे आज पर्यन्त याद हैं कि इनका ख्याल रखना इनको किसी प्रकार का कष्ट न होने पावै। कोई भाई यह समझेंगे कि जेल की कोठरी में अलग-अलग बंद होने वाले कैदियों को यह अवसर कहाँ जो एक ही कोठरी में दूसरा झाड़ू लगावे उसके बारे में मैं यहाँ यह बता देना चाहता हूँ कि यह हम दोनों का कुछ भगवान की कृपा से स्वभाव व प्रेम का प्रभाव ऐसा पड़ा जिससे वहाँ के वेतनधारी जमादार और काम लेने के लिए व निगरानी रखने के लिए नियुक्त कैदी हमसे विशेष रियायत का व्यवहार करते थे। रात के बंद होने के अलावा दिन में कड़ी पाबंदी नहीं रखते थे।

जेल जीवन में अनुभूतियाँ व प्रत्यक्ष प्राय:स्वप्न कल्कि भगवान ने इतने दिए कि मैं गिन नहीं सकता। स्वप्न भी ऐसे जो एक-एक स्वप्न पर न्यौछावर होकर भगवान के ऊपर

पागल हो जाने को मन करे। विद्या, धन, जाति, कुल का अभिमान न मालूम कहाँ बह जाए उसके विचार करने का अवकाश ही न रहे। लालच के मारे रात जाग कर कल्कि कल्कि कहते रहने को मन करे सोने को मन ही न करे। मन में आशा लगी रहे कि अधिक कल्कि कल्कि करने से नहीं मालूम और क्या-क्या दिखाई दे। जीव का मन कल्कि भगवान ही आधार दे देकर जब अपने में लगावें तभी लगे। एक-एक दृश्य एक-एक भाव उनका इतना अलौकिक व प्रिय था कि सारा जीव जगत और सारे जीव जगत का सौंदर्य उसकी तुलना में कूड़े का ढेर मालूम पड़े। नारायण कल्कि का रूप, स्वभाव, ऐश्वर्य, प्रेम, प्रकाश सब अतुलनीय देखकर विचारा अब छूट कर घर नहीं जाएंगे मुक्ति नारायण अयोध्या अथवा ऋषिकेश हरिद्वार चले जाएंगे परंतु स्वप्न में जिस स्त्री की तरफ से मन उदासीन था स्नान किए उज्ज्वल श्वेत धोती पहने, बाल खुले पूजा की थाली हाथ में लिए एक जीने पर चढ़ती हुई दिखाई दी और उसने कमरे में प्रवेश करके एक गोबर से लिपी वेदी पर बैठकर पूजा की थाली सामने रखकर दोनों हाथ जोड़े भगवान के सामने। यह दृश्य देखकर मुझे उस पर बड़ी दया आई कि ऐसी स्त्री की तुम उपेक्षा करते हो। इसकी आत्मा भी तुमसे कम नहीं है। इसकी भी ऊर्ध्व गति है। मन ने कहीं भी जाने का संकल्प त्याग दिया। एक कारण और भी था कि दिल्ली का प्रेम व सम्मान मेरे मन में भारत के बड़े से बड़े तीर्थ से भी कम न था क्योंकि-

1. कल्कि भगवान का नाम मुझे यहीं मिला व महाविष्णु जी के दसवें अवतार की चर्चा सुनने को मुझे इसी धरती पर मिली।
2. रामावतार व कृष्णावतार के सखा मुझे जैसे हनुमान, सुग्रीव, विभीषण, जावाली ऋषि, भगवान अनिरुद्ध, स्वाम्ब, भीमसेन युधिष्ठर, सहदेव इत्यादि सब यहीं मिले व मुझे निश्चय करा दिया।
3. कल्कि भगवान के व दुर्गा के स्वप्न व रूप दर्शन व आवेश अवतार की लीला यहीं सर्वप्रथम देखने को मिली।
4. पूर्व जन्म का ज्ञान यहीं मिला व कल्कि भगवान की निष्ठा यहीं के सत्संग से पक्की हुई।

मन का ऐसा निश्चय था कि अयोध्या का महत्व रामावतार के कारण बढ़ा व मथुरा वृंदावन का महत्व कृष्णावतार के कारण बढ़ा तब यह इन्द्रप्रस्थ जहां सर्वप्रथम कल्कि भगवान की मूर्ति स्वयं हनुमान जी ने स्वप्न की कल्कि भगवान की आज्ञा से स्थापित करी व कल्कि अवतार का पूजन साधन तप कलियुग के नाश के लिए प्रारंभ किया उसके उपरांत महाविष्णुजी ने स्वप्न में अपने आने का संदेशा दिया कि भाई हनुमान मैं इस फूटे ब्रह्मांड का महाविष्णु हूँ जागा हूँ तलवार संभाली है दुनिया को देखूंगा व तुमसे मिलने के लिए आ रहा

हूँ। स्वप्न के दो साल बाद एक ब्राह्मण शरीर में आवेश होकर आए व जो पूर्व जन्मों के नाम स्वप्न में बताए थे उन्हीं नामों से संबोधन करके सबको पुकारा व कहा कि मैंने अपनी भुजाओं के बल पर अवतार लिया है मैं किसी ऋषि मुनि के भरोसे नहीं आया। सारे चंद्र मंडल, सूर्य मंडल असुरों से भरे पड़े हैं, मेरी गउएं कट गई हैं मैं गउओं के रोम-रोम का बदला लूंगा। सारी पृथ्वी के दुष्ट असुरों का वध करके सत्युग स्थापन करूंगा। मैं नई लीला करना चाहता हूँ इसलिए अब तुम कल्कि नाम से ही मुझे पुकारो व साधन मेरे प्रकट होने के ही लिए करो अपने स्वामी रघुनाथ जी की कल्कि रूप से आने की नूतन आशा व आज्ञा हनुमान जी के अवतार वह श्री बालमुकुन्द जी महाराज कल्कि कल्कि की ध्वनि में बड़ी तन्मयता से लग गए। कल्कि नाम को छाती से लगाकर सेव्य-सेवक भाव से कल्कि भगवान को ही परम धन मानते हुए कल्कि की भक्ति का प्रचार करने लगे फिर उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा कि कोई मेरी सुन रहा है कि नहीं, मान रहा है कि नहीं, अपने विश्वास व अपनी लगन से आप आगे बढ़ते हुए वह तरन तारन अपने अगले जन्म के संस्कारी अंतरंग भक्तों को अपने साथ बढ़ाते लिए चले गए व कल्कि के पूजन व कल्कि के जप, कल्कि के हवन, कल्कि के कीर्तन, उत्सव व कल्कि के ब्रह्मभोज भंडारे करते रहे जो लोग सीधे सरल विश्वासी थे और जिनको कल्कि भगवान की लीला को जानने की लालसा थी वह आगे बढ़ गए व भगवान का विश्वास प्रेम आश्रय (अदब) व परवाह पा गए व निहाल हो गए। जो लोग विद्या अभिमान में व तर्क के जाल में बंधे रहे वह अभी कहाँ- अभी कहाँ करते रह गए। भगवान कल्कि की लीला प्रकट हुई म्लेच्छ विध्वंस प्रारंभ हुआ। युद्ध पर युद्ध की काली घटाएं आसुरी दानवी संसार पर मंडराने लगीं। निराशा दूर हुई भारत का भाग्य चमका, हिंदी राज्य भाषा हुई, अपमानित व पददलित देश सर्व-सम्मानित हुआ। सोमनाथ का 800 वर्ष का टूटा मंदिर बना अंग्रेजी राज्य व अंग्रेज का थाना तहसील अमलदारी सिक्का हटा व भारत पर भारत का झंडा लहराया।

ये है कल्कि अवतार की पूर्वाध लीला व आसुरी जगत प्रलयकारी बमों की मार की प्रतीक्षा में खड़ा है जैसे कमेले में बकरा, असुरों की शक्ति श्री कल्कि नाम की शक्ति से घिर गई। वृत्ता वर्णन हुआ।

उत्तरार्ध जो भाग्यवान प्राणी निरभिमान व सरल व शरणागत होकर कल्कि जी का भजन करेंगे प्रभु कृपा से उनकी इच्छा से वह देखेंगे बोलो श्री कल्कि भगवान महाराज की जय। निष्कलंक अवतार की लीला का प्रादुर्भावस्थल भी किसी तीर्थ से कम नहीं है अंतिम युगांतकारी कल्कि अवतार का लीला धाम यह इंद्रप्रस्थ सर्वोत्तम तीर्थ होगा ऐसी मेरी धारणा हुई बाद में पुराणों में देखने से भी पता लगा कि यह मेरी ही कल्पना नहीं सत्य-

सत्य ही तीर्थ प्राचीन काल से भी सर्वोत्तम माना हुआ है और अब तो महाविष्णु जी ने व हनुमान जी ने अपनी लीला के लिए इस निगम-उद्बोधक को वरण करके निर्विवाद सिद्ध कर दिया कि यह सर्वोत्तम क्षेत्र है पहले भी युधिष्ठिर के प्रश्न करने पर कि कृष्ण भगवान की मथुरा से भी उत्कृष्ट धाम कोई और है क्या इस प्रश्न का उत्तर सौभरि ऋषि ने यही दिया था कि यह इंद्रप्रस्थ है यहां इंद्र ने यज्ञ करके ब्राह्मणों को प्रस्थ-प्रस्थ (सेर-सेर) रत्नों की दक्षिणा दी थी व भगवान विष्णु उस यज्ञ में प्रगट हो गए थे। मारे प्रसन्नता के अपने सारे तीर्थ यही स्थापन कर दिए थे व शिव जी से कहा था कि आप भी अपनी काशी यहीं ले आइए। इस कारण मुझे अपनी जन्म भूमि दिल्ली से विशेष प्रेम था। जिस दिन जेल से सन् 1918 में मैं छूटा छूटने की अवधि 14 महीने बाकी थी पता भी नहीं था कि आज छूटेंगे परंतु उस रात स्वप्न देखा कि छूट कर घर गए हैं। दुर्गा का आला सज रहा है पूजन हो चुका है जोत जग रही है प्रकाश हो रहा है मैं स्नान करके वस्त्र बदल रहा हूँ मित्र लोग गेंदे के फूलों की माला व मिठाईयाँ लिए चले आ रहे हैं मैं दौड़-दौड़ कर उनसे गले मिल रहा हूँ। गुरू जी, मनोहर लाल जी, वैद्य राज व बड़े गुरु मथुरा प्रसाद सामने खड़े हैं मैंने उनके चरण छुए इत्यादि स्वप्न देखकर उठा ही था कि एक आदमी आया कि चलो सुपरिटेंडेंट ने दफ्तर में बुलाया है जब मैं पहुँचा तो उसने कहा कि राजद्रोह के सब आदमी छोड़े जा रहे हैं तुम टिकट कहाँ का लोगे मैं सहज में ही दिल्ली आने को तैयार हो गया। जेल से छूटने का पता चलते ही चिंता सवार हुई कपड़े नहीं थे धजा बुरी थी जेल वालों ने एक बुरी भांत का कंबल और एक जांघिया, एक कुरता जो जेल की वर्दी होती है उसी धजा से बाहर निकाल दिया दो आने के पैसे पकड़ा दिए जिसमें तीन पैसे खुराक के पाँच पैसे मेरे अपने कपड़ों की कीमत जो उन्होंने बताया लीलाम कर दिए। पाँच पैसे में जो कपड़े मेरे लीलाम किए उनमें एक धोती, एक कोट, ऊनी कश्मीरी पट्टी का एक ऊनी लाल फुलालेन का कुरता एक जोड़ा जूता और दिल्ली का टिकट खरीद दिया। बरेली जेल से छूट कर रास्ते में विचारा हे कल्कि भगवान पैसे दो आने हैं घर जा रहे हैं छोटा भाई जो जेल जाते समय दो साल का था उसके लिए कुछ मीठा ले जाते खाली हाथ जा रहे हैं। मुरादाबाद स्टेशन पर रेल बदली के लिए उतरे। टिकट कलैक्टर को शक हुआ कि तुम कैदी हो जेल से आए हो मैंने उत्तर दिया छूट कर आए हैं भाग कर नहीं प्रश्न किस मामले में? उत्तर- बनारस कांस्पिरेसी केस से। यह सुन कर बाबू छाती से चिमट गया सगे भाई व पूर्व परिचित मित्र की तरह अपने साथ प्रेम करता हुआ दफ्तर में ले गया और बहुत से अपने साथी बाबूओं से परिचय कराया कि यह पाँच साल बाद अपने घर जा रहे हैं। देश के लिए जेल गए थे इत्यादि उन लोगों ने कहा कि गाड़ी आएगी हम बिठा देंगे निश्चिंत होकर आप

बेखटका बैठें हमें बड़ी आपके दर्शनों से प्रसन्नता हो रही है, खाना मंगवाया खिलाया और कहा कि आपकी मेहनत फल ला रही है जब तो आप थोड़े से ही थे अब वह बात नहीं है जो स्थिति जेल जाते समय आप छोड़ गए थे अब तो चौतरफा आग सी लगी हुई है सारा देश जाग गया है देश की काया पलट हो गई आपकी मुसीबतें रंग लाईं वहाँ मुसलमान रेलवे कर्मचारी भी थे। चूंकि टर्की जर्मनी के साथ मिलकर अंग्रेजों से लड़ा था क्योंकि अंग्रेजों की नीयत एशिया के बचे-कुचे इस्लामी देशों को भी गुलाम बनाने की थी इसलिए मुसलमान भी अंग्रेजों का नाश चाहते थे व अंग्रेज के बैरियों से प्रेम करते थे। बातों-बातों में उन सब ने जेल जीवन के बारे में घर के बारे में प्रश्न किए। घर पर अब आपके कौन है? मैंने बताया कि पिता हैं और छोटा भाई, बड़ा प्रेम व आमोद में समय कटा इतने में गाड़ी आ गई। मुसलमान लोग मुझे रेल में बिठाने साथ साथ आए गाड़ी में बिठला कर डेढ़ रुपया मुझे देने लगे। मेरे इंकार करने पर आंसू भरकर कसम दिलाते हुए बोले ये हम आपको दे रहे हैं इसका मीठा जब आप घर जाएं अपने भाई, छोटे बच्चे के लिए लेते जाना, यदि आप इंकार करेंगे तो हमारा बड़ा दिल दुख मानेगा। वहाँ से चले रास्ते में मैं गंगा लाइन पर चल रहा था। गंगा का ख्याल दिल में आया, जेल में स्वप्न में गंगा की धार दूसरे तीसरे दिन देखता रहता था तो गंगा मेरे से प्रेम करती है यह भाव मेरे अंदर घर कर गया था। गंगा के स्टेशन के दो या तीन स्टेशन पहले से ही मैंने गंगा की स्तुति शुरू कर दी।

गंगा स्तुति

देवि सुरेश्वरि भगवतिगंगे त्रिभुवन तारिणि तरल तरंगे
शंकर मौलि विहारिणि विमले मम मतिरास्तां तव पदकमले
भागीरथि सुख दायिनि मातस्तव जल महिमा निगमे ख्यातः
नाहं जाने तव महिमानं त्राहि कृपामयि मामज्ञानम्
हरिपद पाद्य तरंगिणिगंगे हिमविधुमुक्ताधवलतरंगे
दूरि कुरु मम दुष्कृति भारं कुरू कृपया भवसागरपारम्
तव जलममलं येन निपीतं परम पदं खलु तेन गृहीतम्
मातर्गंगे त्वपियो भक्तः किलतं द्रष्टुंन यमः शक्तः
पतितोद्धारिणि जाह्नविगंगे खण्डित गिरिवर मण्डित भंगे
भीष्म जननि खलु मुनिवरकन्ये पतित निवारिणि त्रिभुवन धन्ये
कल्पलतामिव फलदा लोके प्रणमति यस्त्वां नपतति लोके
पारावार विहारिणि गंगे विवुधवधूकृत तरलापाँगे

तवकृपया चेत स्त्रोतः स्नातः पुनरपि जठरे सोऽपिनजातः
नरक निवारिणि जाह्नवि गंगे कलुष विनाशिनि महिमोत्तुंगे
परिलसदंगे पुण्यतरंगे जय जय जाह्नवि करुणापांगे
इन्द्र मुकुट मणि राजित चरणे सुखदे शुभदे सेवक शरणे
रोगं शोकं पापं तापं हरमे भगवति कुमति कलापम्
त्रिभुवन सारे वसुधाहारे त्वमसि गतिर्मम खलुसंसारे
अलकानन्दे परमानन्दे कुरुमयि करुणां कातर बन्द्ये
तव तट निकटे यस्यहि वासः खलु वैकुण्ठे तस्य निवासः
वरमिह नीरे कमठो मीनःकिंवातीरे संकट क्षीणः
अथ गव्यूतौ श्वपचोदीनो नपुनर्दूरे नृपति कुलीनः
भो भुवनेश्वरि पुण्ये धन्ये देविद्रवमऽपि मुनिवर कन्ये
गंगास्तवमिदममलं नित्यं पठति नरो यः स जयति सत्यम्
येषां हृदये गंगाभक्तिः तेषां भवति सदा सुख मुक्तिः
मधुर मनोहर पञ्झटिकाभिः परमानन्द कलित ललिताभिः
गंगा स्तोत्रमिदं भवसारं वान्छित फलदं विदितमुदारम्
शंकर सेवक शंकर रचितं पठतु च विषयीदमिति समाप्तम्

अर्थ

शंकर की जटा में निवास करने वाली तीनों लोकों को तारने वाली देवताओं की भी देवी, हे भगवती गंगा आपके चरण कमलों में मेरा मन रमता रहे। हे सुख दायिनी माँ भगवती गंगे तुम्हारे जल की महिमा वेदों में विख्यात है। बर्फ, चंद्र व मोती समान आपकी जल तरंग अति मनमोहक है। हरि के चरण कमलों से निकलने वाली माँ गंगे आप मेरे दुष्कर्मों के भार को दूर करके मुझ पर कृपा करके भव-सागर से पार करें। जो आपके पवित्र जल में स्नान करता है वह निश्चय ही परमपद को प्राप्त करता है। माँ तुम्हारा भक्त यमराज की यातना नहीं भोगता। गिरिवर को खंडित कर पृथ्वी की शोभा बढ़ाने वाली, पतितों का उद्धार करने वाली, हे त्रिभुवन को धन्य करने वाली,हे भीष्म जननी मुनिवर कन्ये, हे संसार में कल्पलता सम फल देने वाली, आपको समस्त लोक-पाल नमन करते हैं, हे माँ गंगे आपकी तरल तरंगों पर चंद्रमा किल्लोल करता है। आपकी महिमा अपरम्पार है, हे करुणा की मूर्ति माँ गंगे आपके पवित्र जल में स्नान करने से गर्भ की यातना पुनः नहीं सहनी पड़ती। हे नरक का निवारण करने वाली, पापों का शमन करने वाली माँ जाह्नवी आपकी महिमा अपार है। हे करुणा की मूर्ति माँ आपका जल पतितों को पावन करने वाला व महान पुण्य देने वाला

है। आप शरण आए सेवकों को सुख देने वाली हैं। इन्द्र की मुकुटमणि आपके चरण कमलों में निवास करती है। हे भगवती आप मेरे समस्त रोग, शोक, भय व पापों का हरण कर मेरी बुद्धि शुद्ध करें। सारे त्रिभुवन में व पृथ्वी पर आपके अतिरिक्त मेरी कहीं गति नहीं है। मैं कातर हो आपकी वंदना करता हूँ, आप मेरे ऊपर कृपा करें, आप परमानन्द देने वाली हैं, जिसका निवास आपके तट के निकट है वह निश्चय ही वैकुण्ठ का अधिकारी है। निरंतर आपके जल का सेवन करने से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं व श्वपच व अति दीन-हीन भी राजा के समान कुलीन हो जाता है। हे भुवनेश्वरी अकंट पुण्य की देने वाली आप धन्य हैं। हे मुनिवर कन्ये आप मुझ पर द्रवित होइए। हे मात् गंगे जो नित्य आपकी इस स्तुति को पढ़ता है उसकी निश्चय ही जय होती है। जिसके हृदय में आपकी भक्ति निवास करती है वह निश्चय ही सुख व मुक्ति प्राप्त करता है। मधुर, मनोहर, परमानन्द दायक गंगा जल सेवन करने से समस्त कामनाएं पूर्ण होती हैं। इस गंगा स्तोत्र को पढ़ने से मनवांछित फल प्राप्त होता है। शिव भक्त शंकर द्वारा रचित समस्त प्रकार के फल देने वाला यह गंगा स्तोत्र समाप्त।

यह स्तुति मैं बड़े सुंदर सुर से तन्मय होकर गा रहा था। गंगा देवी के मन में समीप बुलाने की आई, कल्कि भगवान के मन में स्नान कराने की आई। एक मारवाड़ी सज्जन सुन रहे थे। उन्हें ऐसी अच्छी लगी कि बोले महाराज एक बार फिर सुना दो। उनका तो कहना, एकदम सारी स्तुति भूल गया, ऐड़ी चोटी का जोर लगा लिया एक कड़ी मस्तिष्क में न आई, लज्जा के मारे गढ़ा जा रहा था कि यह भद्र पुरुष कहेगा कि नखरे कर रहा है। लाचार होकर दुःखित और लज्जित होकर कहा, सेठ जी भगवान जाने क्या हो गया, मैं बड़ा लज्जित हूँ। सेठ जी बोले हमारी तकदीर, गंगा का स्टेशन आ गया है, चलिए स्नान कर लीजिए शायद रास्ते में ही आपको याद आ जाए हम आपको बड़े सुख से ले चलेंगे, किसी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। मैं उनके साथ गंगा स्नान करने के लिए उतर पड़ा। टांगे में बैठकर धारा पर पहुंचे, स्नान कर विष्णु सहस्त्र नाम का पाठ किया, भोजन मारवाड़ी ने मंगाया, भोजन कर रेल के लिए लौटे। दिन निकल आया। धजा बुरी थी। कंबल जेल का रेल में ही छोड़ दिया था कि कोई ले जाए।

कल्कि भगवान से प्रार्थना करी, हे कल्कि भगवान ऐसी बुरी धजा में कोई जान पहचान का न मिल जाए। रेल के डिब्बे में जैसे घुसे आवाज आई जय श्री कल्कि भगवान की, चेहरा फक पड़ गया जी घबराया ध्यान से देखा तो बालमुकुन्द जी की बैठक में आने वाला कुम्हार मनोहर अपना ही आदमी निकला, जी में जी आया। पूछा अरे मनोहर तेरे पास कुछ कपड़े हैं। उसने एक धोती एक कमीज दी। मैंने उसी समय धोती कमीज पहन, जेल का

जांघिया व कुरता उतार कर वहीं फेंका पौनी धजा सुधर गई। शाम 4 बजे दिल्ली स्टेशन पर आए, दाढ़ी बढ़ रही थी। नंगे सिर नंगे पैर अंधेरा होने तक बाग में पड़ा रहा। अंधेरे में उदासीन किसी तरफ न देखते हुए, एक मित्र के घर गए हजामत बनवाई, स्नान किए, कपड़े बढ़िया पहने, मनोहर के कपड़े मनोहर के घर भिजवा दिए। एक की बरफी, दस आने की जलेबी बाजार से लेकर तब अपने घर गया।

पिता की नौकरी रेलवे की छूट गई थी कि तुम्हारा लड़का राजद्रोही है। माँ का शरीर जब मैं जेल में था मुकदमे के दौरान में छूट गया, छूटा भी किस तरह, मैंने अपनी सफाई के गवाहों में अपने पिताजी का नाम लिखवा दिया। मैं जानता था कि बाप की गवाही बेटे पर लगेगी नहीं परंतु सोचा कि इस बहाने वे मेरे सामने आ जाएंगे। हम लोगों को हंसते देखकर उनको संतोष होगा कि राजी-खुशी हैं। हुआ उल्टा माँ की मृत्यु का कारण बन गया। पुलिस वाले समन लेकर घर आए और कहा बताओ कहाँ है बाबू रामदयाल, नहीं हथकड़ी डाल कर ले जाएंगे। पिता घर पर थे नहीं विदेश गए हुए थे। माँ ने रंज में कि हाय मेरा लड़का तो गया मेरे आदमी की भी बारी आई, छाती में, पेट में घूंसे मार लिए पेट में था बच्चा वह मर गया। माँ भी मर गई। इस प्रकार माँ मर चुकी थी। नौकरी पिता की छूट चुकी थी। 2500 रुपए का कर्ज हो गया था। मेरी स्त्री 5 साल अपने भाई के यहां ही बनी रही। कर्ज भी हरिश्चन्द्र जी से ले रखा था। ये हरिश्चन्द्र जी बचपन से ही मुझ से प्रेम करते थे। संस्कृत व बंगला पढ़ते थे। मेरे जेल जाने से पहले से ही कल्कि का नाम जप करते थे। मेरे आने की खुशी में ब्याज के 175 रुपए पिता पर छोड़ दिए, वे देते रहे, लिए ही नहीं, हाथ भी नहीं धरा। उस समय मुझमें भगवद्ग्रंथो के पढ़ने की इतनी लालसा बढ़ गई थी कि आते ही आध्यात्म रामायण, बाल्मीकि रामायण, श्रीमद्भागवत, विष्णु पुराण संस्कृत के खरीदे व ससुराल चला गया। घरवाली के उन होंठों ने इतना दुःखमय जीवन होने पर भी न मालूम मुझमें उसे क्या अच्छाई दिखाई दे रही थी। कभी शिकायत या उलाहना नहीं दिया उलटा चौगुना प्रेम बढ़ा पाया बल्कि उसे इस बात का गर्व था कि मेरा आदमी ऐसा है कि बड़े बड़े अंग्रेज अफसरों को कुत्तों की तरह फटकार देता है। मैंने ही उससे उसका मन देखने के लिए कहा नहीं तो मैंने अपनी तकदीर को कभी बुरा नहीं कहा क्योंकि मुझे भगवान मिले। जिसकी अच्छी तकदीर होगी वह मेरे पास रहेगा। दुःख में सुख में हर हालत में प्रेम करेगा व श्रद्धा में अंतर (फर्क)नहीं आने देगा और यदि दुःख पड़ेगा उसे भी हंसकर झेलेगा। अब मैंने उससे कहा कि मेरी तकदीर बड़ी खराब है क्योंकि मेरे जैसे आदमी से तेरा विवाह हुआ न तुझे सुख पहुँचा, न आगे ही सुख पहुँचता दिखाई देता है। मैं तेरे लिए अच्छे कपड़े नहीं बनवा सकता, न गहना बनवा सकता। संभव है तुझे सूखे चने या सूखे

टुकड़े मेरे साथ खाने को मिले, हो सकता है कि खाने को भी न मिले फाके ही करने पड़ें। कल को मेरे बाप ने घर से निकाल दिया तो क्या होगा। मैं तो खाली कल्कि कल्कि करना जानता हूँ, पैसा कमाना मुझे नहीं आता परंतु स्त्री ने मेरा उत्साह बढ़ाते हुए उत्तर दिया, न गहना चाहिए न अच्छे कपड़े तुम्हारे साथ का दुःखमय जीवन भी सुखमय होगा। मुझे चाहिए केवल ज्ञान तुम्हारी खुशी में मेरी खुशी है।

विदा कराकर आए ही थे कि पिता ने घर से निकाल दिया। मेरे शिष्य हरिश्चन्द्र ने मकान रहने को अलग बिना किराए को दिया। बीमार चिकित्सा के लिए जानने वाले ही आते थे। थोड़ी आमदनी में काम तंगी से चलता रहा। इन दिनों रुपए का पांच सेर आटा व एक रुपए की 6 धड़ी जलाने की लकड़ी आती थी। साफ सूझने लगा मानो भगवान नाव को आगे ले चल रहे हों। एक दिन आटा व लकड़ी सुबह को नहीं थे। रात दो बजे स्वप्न में देखा कहीं बीमार को देखने जा रहा हूँ। स्वप्न देखते ही देखते सचमुच गली में से बीमार दिखाने वालों ने आवाज दी। आंख खुली बोले अभी देखने चलना है। उनके साथ गए, फीस मिली, सुबह के लिए आटा लकड़ी का प्रबंध हो गया। एक दिन रात को देखा एक बचपन का साथी बिशन स्वरूप कोयले वाला स्वप्न में गले मिला व मेरे सिर पर अपने हाथ से टोपी पहनाई।

सुबह मैं बाजार जा रहा था तो सामने से वही मित्र जिसने रात को ही स्वप्न में टोपी पहनाई थी सामने से आता दिखाई दिया, देखते ही छाती से चिमट कर बलपूर्वक जिधर आप जा रहा था घसीट कर ले गया, तुम्हारे तो दर्शन भी दुर्लभ हो गए इधर कहां जा रहे हो, इधर चलो हमारे साथ, थोड़ी दूर जाकर एक टोपी वाले की दुकान के सामने पहुंच कर वात्सल्य भाव से बोले, लो टोपी पहनोगे, लो तुम्हें टोपी पहनाए। यह कह कर दुकानदार से कहा अरे भई देना दो टोपी, इस प्रकार टोपी खरीदकर, एक मेरे सिर पर अपने हाथ से पहना दी। ठीक स्वप्न दृश्य की तरह और एक मेरे हाथ में पहना दी। मैं कल्कि भगवान से कहता चला आया यार ये टोपी तो तुम्हीं ने स्वयं पहनाई है। इस तरह 6 या 7 महीने निकले स्वप्न में पिता दिक्खे बोले, देखियो बेटा नब्ज आगे को करके मुझे बुखार है। मैंने कहा पसली में दर्द तो नहीं है? जाओ ओढ़कर सोओ कहीं निमोनिया न हो जाए। स्वप्न देखा दूसरे दिन छोटा भाई आया। चलो चाचा ने बुलाया है, बीमार है जाकर देखा सचमुच निमोनिया हो गया। मनोहर लाल वैद्यराज का इलाज किया नवें दिन नन्हें वैद्य जी को दिखाया। वह जवाब दे गए। पिता का शरीर छूट गया।

उसके बाद थोड़े अर्से के स्त्री का भी शरीर छूट गया। दुनिया असार तो उसी समय से निगाह में हो चुकी थी, जब महात्मा शादीराम जी का देहांत हो गया था। उसका मुझे इतना रंज बैठा था कि न घर में चैन न बाहर, न खड़े न बैठे न लेटे, यह मेरे जेल जाने के

पहले की बात है। दिन भर महर्षि श्री बालमुकुन्द जी के पास पड़ा रहता था और कहीं चित्त को चैन नहीं मिलता था। बालमुकुन्द जी धीरज बंधाते थे कि भक्त अमर होते हैं, कोई कहीं नहीं गया है। कल्कि भगवान आवेंगे तब सोते से उठकर आए हुए के समान आ जाएंगे। सांदीपन गुरू का पुत्र जिस प्रकार कृष्ण भगवान ले आए थे। उस समय उस वियोग के दु:ख में बालमुकुन्द जी व कल्कि नाम ही से मन बहलता था। जिन-जिन लड़कों को बचपन में देखकर अत्यंत प्रेम बढ़ा था व जिनको बिना देखे चैन नहीं पड़ता था। रात-दिन, सोते-जागते, चलते-फिरते, खाते-पीते, जिनका ध्यान बना रहता था व तड़पता भी था व जिनसे जरा भी बोल-चाल व जान-पहचान हो जाए तो ऐसी खुशी होती थी जो निर्धन को धन मिलने से, नि:संतान के घर में जैसे संतान होने से, वे मित्र दैव की प्रेरणा से उन रंज के दिनों में बालमुकुंदजी की बैठक में आ ही तो क्यों न जाए उनमें एक श्रीराम मुनीम दूसरे द्वारकानाथ। बाद में पता लगा कि ये भगवान के संस्कारी भक्त हैं, एक तुलसीदास निकले तो दूसरे श्री कृष्णावतार के श्री दामा ग्वाल। वे दोनों आजीवन साथी व प्रेमी रहे। उनमें कल्कि भगवान महाराज की चर्चा करने में दिन सुख पूर्वक निकलते रहे।

जब पहलेपहल दिल्ली कांस्पीरेसी लार्ड हार्डिंग बम केस में पकड़े गए 19 दिन के लिए। उससे पहले स्वप्न में देखा फाँसी के तख्ते पर खड़े हैं। हाथ-पैर बंधे हैं। इतने में गुरू महाराज आए पूछा क्या बात है ? मेरे मुँह से निकला फाँसी का हुक्म हुआ है, सुनते ही झिड़क कर बोले हट किस का हुक्म। मैंने ज्यों ही जोर किया लोहे के बंधन टूट गए। फाँसी के तख्ते से कूदकर आगे गया हरे-हरे खेत व गंगा की धार सुबह स्वप्न देखा। शाम को एक मित्र आया बोला तलाशियाँ होंगी दिल्ली में, एक पुलिस वाले से पता लगा है। सुनते ही खतरनाक सामान क्रांतिकारियों का जो मेरे पास था अपने पास से दूसरी जगह हटा दिया। सुबह चार बजे ही पुलिस वाले ने घर घेर लिया। तलाशी ली, पकड़कर ले गए। इष्ट देव श्री कल्कि भगवान को नमस्कार करके पुलिस के साथ चल दिया। सिविल लाइन की हवालात में पहुँचकर कल्कि भगवान से कहा महाराज आपने अवतार लिया है भूमि का भार उतारने के लिए और हम लोग पकड़े जा रहे हैं लावारिसों की तरह। यही कहते-कहते बैठे ही बैठे नींद का झोंका आया अंगुष्ठ प्रमाण गुरू महाराज की मूर्ति क्रोध में भरी हुई होंठ फड़फड़ाते हुए बोली भैया थोड़े दिन सबर करो तहस नहस कर दूँगा। दो-तीन दिन उपरान्त हवालात में ही स्वप्न देखा एक विशाल-काय ब्राह्मण चंदन लगाए मुझे गोदी में लिटाए मिठाईयाँ अपने हाथ से मुँह में खिला रहे हैं। यह दोनों स्वप्न मैंने अपने ऊपर कल्कि भगवान की कृपा व प्रसन्नता सूचक समझे। दूसरे दिन हवालात में ही पूरब के सिपाही जो मेरी कमान की तलाशी के समय भी आए थे, बड़ी सहानुभूति दिखाई। बाजार से वही मिठाईयाँ जो मैं स्वप्न में ब्राह्मणरूपी परब्रह्म के हाथ से खा चुका था लाकर मुझे दी। पहले

इंकार किया बाद में स्वप्न का ख्याल आते ही शत्रु की जेल में मैंने यह शुभ शगुन समझकर ले लीं व खा ली 19 दिन बाद छूट गया। प्रार्थना करी हे कल्कि भगवान जब शुरू शुरू में सन् 1910 में मुझे जब कल्कि नाम मिला तो शिव शंकर जी ने व शादी राम जी ने व बालमुकुन्द जी ने भी मुझसे कहा कि आपको भजन करने से स्वप्न में कल्कि भगवान के दर्शन होंगे। जो स्वप्न देखो हमें सुना दिया करना। स्वप्न उनके साथियों को सबको ही होते थे व सब अपने अपने आनकर एक प्रकार की सत्संग गोष्ठी में सुनाते ही थे। उस समय मैं ही एक नया आदमी था। मैंने अपने मन में कहा देखो महाराज कभी हम पर भी कृपा कर दें। बालमुकुन्द जी ने कहा तुम्हारे अगले जन्म का नाम भी यदि महाराज बतावें तो हमसे कह देना।

स्वप्न हुआ एक घर में एक उज्ज्वल श्वेत वस्त्रधारी गौरवर्ण ब्राह्मण को गुरूदेव भोजन परोस-परोसकर जिमा रहे हैं और मैं एक तरफ को आँखे बंद करे नंगा दिगम्बर बैठा हूँ। गुरू महाराज ब्राह्मण देव से बोले, देखो, ये कैसे बेशरम हैं, इन्हें शरम नहीं आती नंगे बैठे हैं। यह सुनकर ब्राह्मण मुस्कराकर बोले, तुम्हें नहीं मालूम कि ये अगले जन्म के राम कृष्ण परमहंस हैं। सुनते ही आँख खुल गई। पहले स्वप्न जाकर शिव शंकर जी को सुनाया, वह गुरू होते हुए भी गुरू पद का अभिमान नहीं रखते थे। प्रसन्न होकर पैर छू कर बोले, देखो महाराज हम भी कैसी तकदीर वाले हैं घर बैठे ही परमहंसों के दर्शन करने को मिल रहे हैं । बालमुकुन्द जी को मालूम हुआ, उन्होंने बुलवाया, वहां गए, उन्होंने हरा करती हुई प्रेम भरी अमृतमयी दृष्टि से सींचते हुए से मुस्कुराते हुए खड़े होकर गले तीन बार लगाया।

एक बंगाली सज्जन लाल मोहन कविराज जिनको बाद में हरि बोल के नाम से पुकारते थे वही बालमुकुन्द जी की बैठक में बैठे थे। वे भी गले मिले और बोले तुम तो हमारे देश के ही निकल आए। मेरा निमंत्रण किया। अपनी स्त्री से कहा कि आज हमारे घर रामकृष्ण परमहंस भोजन करने आवेंगे।

दो घंटे पहले से अपार प्रेम में बाट देखते रहे। मैं गया भोजन परोसे उड़द की दाल व चावल की पिट्ठी के फीके चीले बूरा की चाशनी में रसगुल्लों की तरह भोग व घर के ही बने रसगुल्ले व अनेक प्रकार के शुद्ध व्यंजन जिमाए। रोज उनके घर जाकर मैं और वह हम दोनों एक साथ बैठकर कल्कि नाम की माला करने लगे। बालमुकुन्द जी के सब साथी मुझे परमहंस-परमहंस कहकर पुकारने लगे। उन सब में मेरा यही नाम पड़ गया। पुलिस के चंगुल से छूटते ही कल्कि भगवान के स्वप्नों के नशे में आनंद व उत्साह बढ़ा रहता था। एक दिन रास्ता चलते कल्कि भगवान से कहा- हे नाथ, सारा संसार असुर भावापन्न है। सारा संसार मेरा विरोधी है। मुझे इसके विरुद्ध खड़े होने की शक्ति दीजिए। इस भार से

मुझे बड़ी यंत्रणा है, बड़ा कष्ट है, भारत की पराधीनता की बेड़ियाँ ही मेरी बेड़ियाँ हैं। हिंदू धर्म का व भारत का अपमान ही मेरा अपमान है। गुरुजनों को तो मैं ईश्वर कोटि में समझता था। जीव कोटि में मैं अपने ही को समझता था। मुझ व्यक्ति की गऊ ब्राह्मण भक्त पृथ्वी देवता समष्टि के लिए दुःख भरी पुकार थी। मैंने कहा महाराज मैं अकेला हूँ। मेरा कोई साथी नहीं क्योंकि उस समय के कल्कि भगवान के अंतरंग भक्तों के अलावा जो भी मेरे मित्र थे जो अंग्रेज के राज हटाने में अपने प्राण देने का संकल्प कर चुके थे और प्राण दे भी दिए। वे भी जब कल्पना बांधते थे अमरीका व अंग्रेजों के तरीकों के ही स्वराज की बांधते थे। जो मुझे अंदर से अच्छी नहीं लगती थी। भगवान ने मेरी सुनी, एक गुरदास नामी बंगाली ब्राह्मण के लड़के में लालमोहन कविराज की बैठक में, जो उस समय काजी हौज बकावाली गली में थी, प्रवेश कर आन विराजे। उस लड़के के माता पिता और सब आस-पास के लोग माथा खराब हंण्गोल कहने लगे। दो-तीन दिन मैं भी पागल समझता रहा परंतु उसकी गतिविधि की तरफ लक्ष्य बनाए रहा। मैंने उस पागलपन में विचित्रता देखी। शांत स्वभाव, बड़ी भारी-भरकम आँखे खुली संध्या समय ठीक समय पर गुरूदेव दया करो दीनजने स्तुति रोज करे। मेरा मन उनकी तरफ खिंचा। उन्हें प्रसन्न करने के लिए मैं गाने लगा।

तुमिना चिनाले तारा के तोमरे चिन्तेपारे से
तोमारे चिन्तेपारे जे तो मारे चिन्ताकरे।

अर्थात् हे तारा तुम अपनी पहचान न कराओ तो तुम्हें कौन पहचान सकता है। वह तुम्हें पहचान सकता है जो तुम्हारा चिंतन करता है, तुम्हारा ध्यान करता है।

भजन के गाते ही वह गुरदास मेरी तरफ आकर्षित हुआ। जब से उसका भाव अन्यमनस्क रहता था, वह भगवान की बातों में विशेष रुचि रखने लगा था। इसलिए कविराज लालमोहन जी ने उसका नाम गोपाल रख दिया था। आकर्षित होते ही उसने भी साथ में गाना गाया और एक भजन उसने गाया जिसमें मैंने उसे सहयोग दिया। इस प्रकार साथ-साथ भजन गाते ही गाते वह प्रेम बढ़ा कि एक पल को भी उनका मन मुझे छोड़ने को न करे और मेरा भी मन लग गया। खाना घर से खाया और उसी के पास पहुंच गए।

एक दिन दुशाला ओढ़े पीतल की बंसरी हाथ में लिए खड़े थे। मेरे सामने पहुंचते ही प्रेम का समंदर मानो हिलोरे ले रहा हो बोले ओ ओ परमहंस जाओ मैंने आज से तुम्हारा नाम परमानंद रक्खा। मैं ही तुम्हारा कल्कि हूँ। तुम मुझसे शक्ति माँगा करते हो मैं तुम्हें शक्ति दूँगा। तुम मुझसे कहते हो मैं अपने विचारों का अकेला ही हूँ। क्यों कहते हो मैं तुम्हारे साथ हूँ। जब-जब तुम उद्विग्न (उदास) होओगे मैं तुम्हें खुश करूंगा। तुम कहा करते

हो मुझसे कि बड़ी जन्त्रणा है। तुम्हें मैं अपना कष्ट क्या बताऊँ मेरे मन में कभी कभी आती है कि अपना सिर अपने हाथ से काट डालूँ। ये लोग, जिधर बदमाशी कर रहे हों, उधर तुम मत देखना मेरी तरफ निगाह दृष्टि रखना। जब मैंने देख लिया कि यह सारी मेरे मन की छिपी हुई सच्ची बातें बता रहे हैं। मैं भागा-भागा जल्दी से बाजार से बरफी व पुष्पमाला व फूलपान लाया। मैंने उन्हें खिलाई, उन्होंने मुझे खिलाई। अपने गले की माला मेरे गले में डाल दी। इतने में गुरुवर बालमुकुन्द जी आ गए, उनको देखते ही दोनों भुजाओं को पसार कर झपट कर छाती से लगा लिया, हनुमान जी हनुमान जी कह कर चिपट गए और बोले अबकी से तो मैंने आपको कष्ट कोई भी नहीं दिया है। अबकी से तो आपको सागर भी लंघन नहीं करना पड़ा है। बालमुकुन्द जी ने चरण छूकर पूछा महाराज जी जो-जो शक्तियाँ जैसे जर्मनी इत्यादि वह किस अवस्था में है तो कहा मर गए, और अंग्रेज? तब कहा कि वह तो बिल्कुल ही मर गया। जब पूछा अपने भारत से अंग्रेज को कब निकालोगे तो कहा जो दिन मैंने सोच रखा है, मैं किसी को नहीं बताता। उसके बाद मेरे से संबोधन करके कहा तुमको कुछ कहना है परमानंद। मैंने हाथ जोड़कर कह दिया, महाराज परब्रह्म से किस बुद्धि से बात करनी चाहिए वह मैं जानता नहीं। ये गुरु महाराज बैठे हैं जो इनकी इच्छा है सो मेरी इच्छा है। जो यह चाहते हैं सो ही मैं चाहता हूँ। बातें हो रही थी, लड़के का बाप आया, उससे बोला घर चलने को, बैठक के ऊपर ही कमरा था। उससे हमसे बोले चलो अभी आते हैं। उस लड़के बेचारे को होश नहीं, न मालूम कितना वजन, बोझ उस पर था। तीन जने उठा कर ऊपर ले गए उसको खाट पर लिटा दिया।

जिस समय वहां से चले मन, प्राण व शरीर की अवस्था ही विचित्र थी। घर आए, सो गए। स्वप्न में कोई शक्ति मेरे शरीर में भगवान ने छोड़ी। आकाशवाणी की तरह आवाज आई। यह शक्ति किसकी है। मेरे मुंह से निकला, है। परमब्रह्म यह शक्ति तेरी है, बराबर में ही उज्वल वस्त्र पहने कल्कि मंडल के आदिगुरु श्री बालमुकुन्द जी हाथ में गदा लिए वहीं बराबर में खड़े थे। निषेध करके बोले- हः हः नहीं हे परमब्रह्म ये शक्ति आपकी है। मैंने उसी समय कहा- हे परमब्रह्म यह शक्ति आपकी है।

महाक्रांतिकारी की खोज

भारतवर्ष की महान पुण्यभूमि इंद्रप्रस्थ में सनातन धर्म में अत्यंत निष्ठावान दुर्गा के उपासक कान्यकुब्ज ब्राह्मण के घर सम्वत्1950 की दिवाली के दिन मेरा जन्म हुआ। जन्म कुण्डली का नाम रोपण था। उस घर में आँखें खुलीं तो नित्य प्रति माता पिता को दुर्गा की पूजा और आरती करते हुए, चंडी का पाठ और गायत्री का जाप करते हुए देखा। माता पिता में धर्म

के प्रति, भगवान के प्रति अत्यंत निष्ठा व प्रेम देखा और परस्पर का अलौकिक प्रेम जो आजकल देखने को नहीं मिल रहा वह भी देखा। उन माता पिता के विश्वास पूर्ण अटल विचारों का प्रभाव मेरे मन को विकसित करने लगा। इसके अतिरिक्त माता पिता की दिनचर्या में रामायण की कथा और पाठ भी था। उनके संपर्क में मुझे रामायण सुनने का अवसर प्राप्त हुआ। मेरा प्रेम रामचंद्र जी से दिन दूना रात चौगुना बढ़ने लगा। दुःख और सुख में भगवान के ऊपर माता पिता की आत्म-निर्भरता और उस निर्भरता का मूल कारण दुर्गा की दी हुई अनुभूतियां जो उन्हें भविष्य का ज्ञान करा देती थीं उसने भी मेरे विश्वास को बढ़ाने में सहायता दी। बचपन कानपुर में बीता। हमारे पिता ने पंडितों की पाठशाला में मुझे पढ़ाया वे पंडित भी सौभाग्य से बड़े कर्म कांडी एवं निष्ठावान थे। तीन तीन चार चार घंटे पूजा में बैठे रहे और सब नियमों से निश्चिंत होकर भोजन करते थे। वे ब्राह्मण बड़े प्रेम से, परिश्रम से विद्यार्थियों को पढ़ाते थे। ऐसे में ही अविश्वास के युग की पहली टक्कर तब लगी जब अंग्रेजी पढ़ाई में प्रवेश किया। बंगाल के प्रसिद्ध क्रांतिकारी रास बिहारी बोस के दाहिने हाथ दिल्ली के मास्टर अवध बिहारी माथुर बी.ए.बी.टी. अंग्रेजी पढ़ाने के लिए पिताजी की ओर से नियुक्त थे। अंग्रेजी और उर्दू की किताबों पर किताबें खत्म होने लगीं। हिन्दी मुझे रामायण से ही आ गई। हिन्दी में मुझे परिश्रम नहीं करना पड़ा। पिताजी से सुन सुनकर सुंदर कांड, किष्किन्धा कांड हिन्दी पढ़ने से पहले ही कंठस्थ हो चुके थे। रात दिन रामायण की चौपाइयाँ ही गाया करता था। बारह खड़ी याद होते ही रामायण में लग गया और रामायण ने हिन्दी सिखा दी। उर्दू की पढ़ाई में इतिहास से काम पड़ा। बाबर और तैमूर के हमले, सोमनाथ के मंदिर का लूटा जाना अलाउद्दीन खिलजी का चित्तौड़ पर आक्रमण, रानी पद्मावती को सताना इन बातों का मेरे मन पर बड़ा शोक संवर्धक प्रभाव पड़ा, मन में घोर चिंता रहने लगी और इस बात की जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि सचमुच कोई हमारा भगवान है, अवतार लेता है और अब लेगा तो कब लेगा? जबकि अब तक नहीं आया। बड़ी घोर निराशा, बड़ी घोर यंत्रणा में समय बीतने लगा भगवान के नाम में जी नहीं लगता था और इस असमंजस में था कि मैं अपना जीवन किस बढ़िया से बढ़िया मार्ग और किस बढ़िया से बढ़िया काम में लगाऊँ। एक दिन रास्ते चलते-चलते रो-रोकर प्रार्थना करी कि हे भगवान, आप ऐसे हैं भी कि नहीं जैसे रामायण और भागवत् में लिखे हैं। यदि आप ऐसे ही हैं जैसे रामायण और भागवत् में लिखे हैं तो अवतार होना चाहिए। रामावतार के समय के पृथ्वी के भार से और कृष्णावतार के पृथ्वी के भार से इस समय का भार क्या कुछ कम है। ये बेचैनी बढ़ती चली गई। रात के दो बजे तक नींद नहीं आई। अवध बिहारी जी के विचारों का प्रभाव पड़ने लगा। वे बोले देश का काम करना चाहिए। गृहस्थी में रहकर

मोरी का कीड़ा मोरी में पैदा होकर मोरी में मर गया इस प्रकार अच्छे ध्येय में जीवन नहीं लग सकता। देश भर में से विदेशी विधर्मियों को निकालना है। अपने देश की उन्नति करनी है। अपने वीरों का इतिहास पढ़ना और पढ़ाना है। स्वदेशी माल खरीदना है और उसी का प्रचार करना है। जनता में शिक्षा नहीं है उसके लिए जनता में देशभक्ति पैदा करने के लिए देशभक्ति बढ़ाने वाले साहित्य की लाइब्रेरियाँ खोलनी हैं। बड़ा काम ही काम पड़ा है। देश में नौजवानों को क्रांति के लिए तैयार करना है। देश के काम के लिए जीवन ही समर्पण करना है। हम लोग बीज की तरह गल जाएंगे, हमारे बलिदान के प्रभाव से काम करने वाले अगाड़ी पैदा होंगे। लक्ष्मी, तुम गीता पढ़ा करो। उन्होंने आनंदमठ की पुस्तक पढ़ने को दी। सन् 1904 से सन् 1953 तक हमारा उनका साथ रहा। गीता मैं ले आया, गीता का पाठ मैं किया करता था, उससे शांति मिलती थी। सन् 1904 में कोई पंडित काशीनाथ प्रयाग से आए थे और देहली में देशभक्ति और स्वदेशी वस्त्र पहनने पर उनका भाषण हुआ था। बस इसी अपराध पर उनका वारंट निकल गया था। उस वारंट ने दिल्ली के नौजवानों के दिलों में आग सी लगा दी। अन्जुमन तरक्की ऐ सनत् हरफत हिन्द दिल्ली का दफ्तर नई सड़क पर खुला वहाँ दिल्ली के कार्यकर्ता एकत्रित होते थे। योजनाएं बनाई जाती थीं, विचार विमर्श होता था, पोस्टर लगाए जाते थे, जल्से होते थे और हजारों आदमी एकत्रित होते थे। धुंआधार आग बरसाने वाली तकरीरें होती थीं। सैय्यद हैदर रजा, चन्दुलाल चावल वाले, मास्टर अमीर चंद यह उस समय के माने हुए लीडर थे। इसमें सैय्यद हैदर रजा के भाषण बड़े ही उत्तेजनात्मक होते थे। अंग्रेजी सरकार उनके नाम से भय खाती थी। उनके भाषणों का जनता पर बड़ा प्रभाव था। आसफअली रऊफ अली सैय्यद हैदर रज़ा के पीछे-पीछे बच्चों की तरह फिरते थे। स्वदेशी का प्रचार दिन दूना रात चौगुना फैलता चला जा रहा था जिसको राज्य नहीं चाहता था। बंगाल से लेकर सारा भारतवर्ष अंग्रेजों की गुलामी का जुआ उतार कर फेंकने को उद्यत था। सन् 1907 में इस ओर सरकार का दमन चक्र पूर्ण वेग से चल रहा था। वन्देमातरम कहने पर सात-सात साल की जेलें होती थीं। स्वदेशी प्रचार के जलसे लाठियाँ मार-मार कर भंग किए जा रहे थे। इधर सूरत कांग्रेस बड़े संघर्षमय वातावरण में प्रारंभ हुई। Extremists(उग्रपंथी) व मॉडरेट्स में टक्कर हुई तिलक महाराज के ऊपर ''स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है'' कहते ही लाठियों, जूतों और कुर्सियों की बौछार हुई। उस झगड़े में कांग्रेस के दो दल हो गए। बाहर निकलकर तिलक महाराज ने अपने समूह के साथ फोटो खिंचवाया जिसमें तिलक महाराज, अरविंद घोष, बीरेन्द्र कुमार घोष, सरदार अजीत सिंह, विपिन चंद्रपाल, डा. मुंजे, खापर डे, सैय्यद हैदर रज़ा, लाला लाजपत राय और सूफी अंबा प्रसाद थे।

विरोधी नेताओं में सर फिरोज शाह मेहता का नाम मुझे याद है। जब ब्रिटिश सरकार ने खुला काम नहीं करने दिया और लाठियों के प्रहार से और आजीवन देश निर्वासन से और लंबी अवधि के कारागार से देश का काम बंद कर दिया तो देश में बम-बम महादेव का प्रादुर्भाव हुआ। खुदी राम बोस और प्रफुल्ल चंद्र चाकी अत्यंत अत्याचारी ब्रिटिश शासक के ऊपर बम फेंकने गए थे। वह तो किसी प्रकार बच गया परंतु जेम्स केयर हार्डी की पत्नी और लड़की पर बम पड़ा और वह मर गई। खुदी रामबोस पकड़ा गया। प्रफुल्ल चंद चाकी को जब एक बंगाली स्टेशन मास्टर पकड़ने चला तो उसने कहा कि अरे तुम बंगाली होकर हमें पकड़ते हो। ये कहकर गोलियां दागीं और वह गोलियां खाली गईं। प्रफुल्ल चंद्र चाकी ने जो जीवित गिरफ्तार होना नहीं चाहते थे, एक बची हुई गोली अपनी छाती में मार ली और अपना अंत कर लिया। उनकी अर्थी के साथ लाखों बंगाली श्मशान घाट गए और उनकी राख को उठा-उठा कर ले आए कि हम अपने बच्चों के ताबीजों में ये राख भरेंगे जिससे कि ऐसे बच्चे हमारे भी पैदा हों। खुदी राम बोस गीता का पाठ करते-करते फांसी के तख्ते पर चढ़ गए। उनकी अवस्था बहुत छोटी थी। इसके बाद सारे बंगाल में क्रांतिकारियों का जाल बिछ गया। मेरे मन में भी क्रांतिकारियों से संपर्क स्थापित करने के लिए क्रांतिकारियों की खोज की इच्छा हुई। सोचा बस जीवन इसी काम में लगाना है यही काम सबसे बढ़िया है। मास्टर अमीर चंद के मकान के एक कमरे में अवध बिहारी रहते थे। एक कमरे में पंडित गणेशी लाल खत्ता महरौली वाले रहते थे। स्वामी रामतीर्थ के शिष्य स्वामी नारायण भी वहां आकर ठहरा करते थे। लाला लाजपत राय के साथ देश निर्वासित सरदार अजीत सिंह जो बाद में भारत लौट आए थे वह भी वहाँ आकर ठहरा करते थे और अमरावती, पूना, बंगाल और पंजाब के क्रांतिकारी आ आकर ठहरा करते थे उनसे मेरा संपर्क स्थापित हुआ। उस घर में वेदांत, देशभक्ति, समाज सुधार और देश उद्धार के तरीको पर वाद-विवाद हुआ करता था। कर्मयोग और भक्तियोग की चर्चा रहा करती थी। लाइब्रेरी खोली गई। उसके मैनेजर अवध बिहारी जी बने। हजारों पुस्तकें उसमें एकत्रित की गईं। सारे समाचार पत्र, उर्दू, अंग्रेजी, हिन्दी के वहाँ आया करते थे। अंग्रेजी में अरविन्द घोष का कर्मयोगी अखबार आया करता था। बड़ी-बड़ी स्वदेशी प्रदर्शिनियों का मास्टर अमीर चंद स्वयं आयोजन करते थे। मैं उसमें वालियन्टरों की तरह निःशुल्क काम किया करता था। देशभक्ति का साहित्य, विपिन चन्द्रपाल के भाषण व जीवन चरित्र, लाला लाजपतराय की उर्दू लिखी हुई शिवाजी मराठा वीर चरित्र दादा भाई नौरोजी की लिखी हुई देश की बात और देश भक्तों के चित्र। जो पैसे पैसे में बिका करते थे पूना से मंगाये जाते थे। उन्हें भी सड़कों पर, जलसों में, जलूसों में स्टाल लगा कर बेचा जाता था। उनमें चित्र होते थे खुदी राम बोस, स्वामी विवेकानंद, स्वामी रामकृष्ण परमहंस, स्वामी

रामतीर्थ, तिलक महाराज, गोखले, राणा प्रताप, शिवाजी, रानी झाँसी, तातियाँ टोपे, नाना राव पेशवा और जितने भी देशभक्त उस समय के थे उनके चित्र बेचे जाया करते थे। उसकी आमदनी का सब पैसा लाइब्रेरी में लगता था सब लोग मिलकर देशभक्ति के गीत गाया करते थे।

ऐ जमीन हिन्द अब मत जार हो। रुख से आँसू पोंछ ले होशियार हो॥
तेरे फरजिन्दों ने दिल में ठान ली। जान तक हाजिर है गर दरकार हो॥
हाय हम उस दिन को जिन्दा क्यूँ रहे। तू तो सर माँगे हमें इन्कार हो॥
हथकड़ी पहनेंगे कंगन की जगह। हार के बदले गले में दार हो॥
खोद कर मिट्टी बने हम कोहकन। घर से प्यारी जेल की दीवार हो॥
रंग लाएगा शहीदों का लहू। क्यों न होली धूम का त्यौहार हो॥

तिलक महाराज को जब कुछ लेखों पर 6 साल की जेल हुई थी। उसके विरुद्ध रोष प्रदर्शित करते समय जब भरे जलसे में नहर सहादत खाँ पर जो नज्म पढ़ी गई थी उसे भी बड़े जोश के साथ सब गाया करते थे। उसकी दो कड़ियाँ जो मुझे याद हैं वे निम्नलिखित हैं-

जमीने हिन्द भी फूले फलेगी एक दिन लेकिन।
मिलेंगे खाक में लाखों हमारे गुल बदन पहले॥
तिलक महाराज की जय हो जिन्होंने ये दिखाया है।
कि शुभ कामों में होते हैं हमेशा ब्राह्मण पहले॥

वहीं पर मेरा सहारनपुर के चटर्जी, सरदार अजीत सिंह, रामचंद्र पेशावरी व बंगाल के और क्रांतिकारियों से संपर्क हुआ और अंत में रासबिहारी बोस से संबंध स्थापित हो गया। धर्म के संबंध में प्राय: ये सारे के सारे साथी अनभिज्ञ और उदासीन थे और अपने धर्म से प्रेम होते हुए भी इन लोगों में धर्म के प्रति कुछ रुचि न थी और ये सब उस विषय में मेरी कुछ सहायता भी नहीं कर सकते थे। कर्म क्षेत्र का मार्ग निश्चित हो जाने पर भी जिस धर्म में मैं पैदा हुआ था वह सत्य है और भगवान अवतार लेते हैं भक्तों को दर्शन देते हैं इस विषय में मैं अंधकारपूर्ण था। इसलिए मैं उद्विग्न व व्याकुल रहता था। एक दिन रास्ता चलते-चलते रो-रो कर प्रार्थना करी कि हे भगवान यदि आप हैं और ऐसे ही हैं जैसे श्रीमद्भागवत् व रामायण में वर्णित है तो मुझे निश्चय करा दीजिए। सर्वदा युग-युग में धर्म की रक्षा के लिए आप अवतार लेते आए हैं। अब भी अधर्म बढ़ा हुआ है गौहत्या हो रही है जिसको रामायण में और पुराणों में महापाप लिखा है। पहले के शासक भी गौ हत्यारे थे और अब जो शासन कर रहे हैं वे भी गौओं के हत्यारे हैं अगर ऐसे समय भी आपने अवतार न लिया तो इसका क्या प्रमाण है कि आपने पहले अवतार लिया था और आपको धर्म प्यारा है?

फिर धर्म का सम्मान संसार में कैसे रहेगा और कब तक रहेगा हे नाथ मुझे मार्ग दीजिए। चूंकि धर्म के और ईश्वर के बारे में मैं कुछ भी नहीं जान पाया हूँ और अंधा व अज्ञान हूँ। आप ही ज्ञान दोगे तो मिलेगा आँखे खोलोगे तो खुलेंगी।

उस निराशा और अंधकार में और दुःख भरी व्याकुलता की अवस्था में आशा की किरण भी झलक रही थी जो मेरा विश्वास है कि भगवान के अतिरिक्त और कहीं से नहीं आ सकती थी। मैं पहले ही कह चुका हूँ कि एक आस्तिक परिवार में मेरा जन्म हुआ जो दुर्गा की मूर्ति की पूजा करते थे। राम और रामायण से प्रेम करते थे। पौराणिक धर्म में आंतरिक विश्वास था। माता पिता पूर्ण तन्मयता से भगवती जगन्माता में लगे हुए थे। उनके भजन पूजन के प्रभाव से उन्हें स्वप्न होते थे। जिनमें उनको होनहार बातों का आभास मिल जाया करता था और वे सत्य हो जाया करती थीं मुझे भी विश्वास करने का अभ्यास हो गया था। वह मेरे साथ भी बीतने लगी। जब कभी सरदार अजीत सिंह को स्वप्न में देखता सचमुच वे सवेरे देखता कि वह देहली में आए बैठे हैं। अवध बिहारी लाहौर में बी.ए.बी.टी. में पढ़ते थे। मुझे उनसे बड़ा प्रेम था। जब कभी स्वप्न में देखता सचमुच वे देहली में आन उपस्थित होते थे। मेरे को ज्ञात होने लगा कि कोई अज्ञात शक्ति ऐसी है जो मेरा विश्वास बढ़ा रही है और मुझे आंतरिक अंतर्मुखी वास्तविक सत्य की तरफ आकर्षित कर रही है। बाद में भगवान ने वह विश्वास इतना दृढ़ कर दिया कि तीर्थ, व्रत, पूजा, पाठ और पुराणों में वर्णित धर्म की समस्त विधियाँ जिसको वर्तमान काल का सत्य से भ्रष्ट अभागा जगत बुढ़िया से सम्बन्धित और स्त्रियों से ही सम्बन्धित रूढ़ि धर्म कह कर उपहास कर रहा है वह एक एक करके ईश्वर से सम्मानित और पोषित व प्रमाणित सिद्ध हुए। पिता को तो इतनी सफलता प्राप्त हो गई थी कि स्वप्न की दुर्गा की आज्ञा से कानपुर में मालबाबू की नौकरी छोड़कर दिल्ली चले आए। वो आज्ञा मेरे लिए आगे चलकर अलौकिक भाग्योदय का कारण बनी, क्योंकि मेरे लिए जो सद्गुरू भगवान ने नियत कर रखे थे वह मुझे दिल्ली में मिले। दुर्गा के जप और पूजा के प्रभाव से मेरे पिता में एक प्रकार की सिद्धि प्रगट हुई कि जो मुँह से कहने लगे वह सत्य होने लगा उससे भयभीत होकर उन्होंने माला गंगा में बहा दी कि मेरे से किसी का अनिष्ट न हो जाए कारण कि मैंने क्रोध को वश में नहीं किया है जप करना बंद कर दिया। संसारियों की तरह जीवन बिताते रहे। विश्वास और प्रेम दुर्गा में अटल रहा। उन्हीं दिनों दिल्ली में एक ब्राह्मण जिनका नाम पंडित बालमुकुन्द जी था जोकि रामावतार के हनुमान जी थे। वह परम वैष्णव एवं भगवान विष्णु के आगामी अवतार कल्कि रूप के उपासक थे। वे घोड़े पर सवार कल्कि अवतार की पीतल की मूर्ति को स्नान, वस्त्र, पुष्प, धूप, दीप और नैवैद्य से पूजन किया करते थे और भगवान का नाम

जपना और नवधा भक्ति का उनमें पूर्ण रूप से समावेश था। भगवान के रहस्य भरे अतीन्द्रिय ज्ञान और प्रत्यक्ष अनुभवों के जिनमें प्रमाणों की आवश्यकता नहीं होती सागर थे। भगवान के ध्यान में अहर्निशी सोते और जागते निमग्न रहते थे। उनसे मेरा सत्संग हो गया। उनके पास जाकर मुझे परम शांति मिली। भगवान की नई लीला का संदेश मिला। उन्होंने बताया कि कल्कि भगवान महाराज ने धर्म की रक्षा के लिए अधर्म का नाश करने के लिए धर्म के और गौओं के बैरियों के संहार करने के लिए अवतार लिया है। रामावतार व कृष्णावतार के भक्तों को स्वप्न में उनके पूर्व जन्मों के नाम बता-बता कर कलियुग की आयु को काटने के लिए और पूर्ण कार्य की सिद्धि की शीघ्रता के लिए अपने जप पूजादि कर्मों में नियुक्त कर दिया। कल्कि भगवान की वात्सल्यमयी अपार दया दृष्टि से उन प्रतीक्षा करने वालों में एवं जप पूजा का आनंद लेने वालों में मुझे भी स्थान मिल गया। श्री बालमुकुंद जी ने बड़ी दृढ़ता के साथ ओजस्वी शब्दों में आश्वासन दिया कि जो तू चाह रहा है वह ही सत्य है और वह भगवान को प्रिय है। तेरे मन में पीछे आई है पहले भगवान के मन में आई है। हिंदू धर्म के और गौओं के अपमानकारियों का संहार चला आ रहा है। गौ हत्याकारी जगत पर, युद्ध पर युद्ध आवेंगे और प्रलयकाल का दृश्य उपस्थित हो जाएगा सृष्टि को बचने के लिए दूसरा मार्ग नहीं है सिवाय इसके कि गैया और गोविंद की सेवा करे। पुराण में वर्णित धर्म की विधियों का एवं तीर्थों का सम्मान करें और भक्ति में एवं धर्म में सावधान रहें। मन, बुद्धि, वाणी, कर्मों द्वारा शुद्ध अंतष्करण से भगवान का भक्त बनें। चारों युगों के रामायण एवं महाभारतकालीन प्राचीन ऋषि मुनि देवताओं और भक्तों को भी नए सिरे से भक्ति सीखने के लिए और करने के लिए जन्म दे दिए गए हैं। उन पर जो कष्ट पड़ेंगे। उनके कष्टों से और उनके भजन पूजन एवं पुकार से लाखों वर्ष की लंबी अवधि वाला कलियुग सूली का काँटा बन कर कट जाएगा। भक्तों का बेड़ा पार होगा। विपत्तियां तप बन जाएंगी। धर्म की जय जयकार होगी। गौओं के बैरियों का सर्वनाश हो जाएगा। भक्तों के प्रेम में बंधे हुए श्री कल्कि भगवान महाराज प्रगट होंगे और उनकी राजगद्दी होगी। सारे संसार में धर्म के प्रतिपक्षियों बैरियों एवं विरोधियों के अस्तित्व का चिह्न भी नहीं रहेगा। मेरे असंख्यों जन्मों के आंतरिक संस्कारों के अनुकूल शब्द जब मेरे कानों में पड़े और असंख्यों जन्मों के ही पूर्व परिचित के समान महावीर हनुमान पंडित बालमुकुन्द जी का आकार हृदय में ऐसे समा गया जैसे ताले में उपयुक्त ताली बैठ जाती है जिस बात की मुझे आंतरिक पिपासा थी वह ही वस्तु मुझे मिली। अनंत कोटि ब्रह्माण्ड नायक श्रीमन्नारायण क्षीरसागरवासी के अंतिम अवतार श्री कल्कि भगवान को इष्ट रूप में पाकर मैंने अपने भाग्य की अनंत सीमा समझी। उनके दर्शनों से ही विश्वास हो गया।

अनंत जन्मों की तपस्या से भी दुर्लभ केवल भगवत कृपा से ही प्राप्य, कृतज्ञ होकर ग्रहण करने योग्य, भगवान कल्कि की भक्ति का अनंत प्रकाश पूर्ण मार्ग मुझे मिल गया। मेरी आत्मा कृत्य-कृत्य हो गई। इधर अपूर्ण साथियों में जो अविश्वास के अंधकार में चमगादड़ों की तरह उल्टे लटक रहे थे, उनमें चैं चैं मैं मैं शुरू हो गई जो कि बी. ए. एम. ए. और बड़े विद्वान तथा देश भक्त थे। बड़ी बड़ी डिबेटें प्रारंभ हो गईं। तर्क वितर्क चल पड़े परंतु मेरे मन पर उन बी. ए. एवं एम. ए. साथियों का जो कि निःसंदेह बड़े त्यागी और सच्चे अंतष्करण के लोग थे और जिनका मेरे दिल में आज तक भी वैसा का वैसा सम्मान है कोई प्रभाव न पड़ा। बड़े-बड़े शास्त्री, बड़े-बड़े विद्वान एवं ब्राह्मण कल्कि अवतार अभी कहां अभी कैसे करते रह गए परंतु मैं, आँख बंद करके किसी की तरफ न देखते हुए आगे बढ़ता चला गया तो क्षीरसागरवासी निष्कलंक श्री कल्कि भगवान की महान महिमाओं से भरे हुए अनुभवों को पाकर मैं निहाल हो गया जिसके सागर में मेरे श्री गुरु निमग्न रहा करते थे। क्रांतिकारी की खोज करते करते महान क्रांतिकारी श्री कल्कि भगवान महाराज का साक्षात्कार हो गया। इस अविश्वास व अंधकार के युग में जबकि इस सृष्टि का प्रत्येक प्राणी, परलोक, परकाल, ईश्वर धर्म के विषय में अविश्वासी है और प्रकाश शून्य है। लोमड़ी अंगूर वाली कहावत के अनुसार सृष्टि का प्रत्येक प्राणी पुनर्जन्म, परलोक, ईश्वर की मूर्ति की पूजा, भक्ति और भक्ति के फल के बारे में निराशा भरे अधोगति को ले जाने वाले शब्दों का प्रयोग करके आप स्वयं भ्रष्ट हो रहा है और औरों को गिरा रहा है। ऐसे समय में ईश्वर बाँह पकड़ ले तो ये क्या कम भाग्य की बात है ? अब यहाँ से मेरा सफलता का मार्ग, जो साध्य भी है और साधन भी है, चल पड़ा।

हनुमान जी के अवतार गुरु श्री बालमुकुन्द जी के बताए हुए कल्कि भगवान के जप पूजा आदि कर्मों से प्रसन्न हुए वे कल्कि भगवान ने हमें अपनी अलौकिक लीलाएं दिखाईं।

तुष्टो हरिर्मे भगवाञ्जप पूजादि कर्मभिः।

स्वप्ने मामाह मायेयं स्नेहमोहविनिर्मिता॥

अयंपितेयं मातेति ममताकुल चेतसाम्।

शोक दुःख भयोद्वेगजरामृत्यु विधायिकः॥

जो नहीं देखा, नहीं सुना जो मन में न समाए ऐसी-ऐसी विचित्र अनुभूतियां दीं। हिंदू धर्म में, पुराणों में, पुराणों की पूजन पद्धतियों में, अवतारों में प्रत्यक्ष प्रमाणों द्वारा कोई किसी प्रकार की शंका बाकी न छोड़ी। शंकाएं निर्मूल कर दीं। पाँच साल के जेल जीवन में भी ईश्वर की असंख्यों लीलाएं देखीं। जिससे यह प्रमाणित हो गया कि इतिहास में जो पढ़ाया जा रहा है कि आर्य मध्य एशिया से आए और भारतवर्ष के ये आदिवासी नहीं हैं, ये बात

बिल्कुल असत्य और घातक है। अंग्रेज ने हमारे भारतवर्ष में फूट डलवाने के लिए उपर्युक्त धारणा हमारे भारतवर्ष के बच्चों में 150 साल में स्कूल व कालिजों में रटा-रटा कर रूढ़ि मस्तिष्कों में भर दी। जिसके ऊपर विश्वास करने वालों में इस लोक में अशांति बढ़ती है और परलोक का नाश हो जाता है ये विचार श्रीकृष्ण भगवान महाराज के वचनों में अविश्वास पैदा करता है। वेदों के भी विरुद्ध है और अनुभव के भी विरुद्ध है। इस मामले में हमारे ब्राह्मण सच्चे निकले उनका बताया वह मार्ग भी सच्चा निकला। ब्राह्मणों में अश्रद्धा पैदा करने वाले सारे देश के, चारों वर्णों के और आगामी सन्ततियों के घोर शत्रु हैं। सुधारवादियों ने धर्म विरुद्ध जो विचार धाराएं चलाई हैं वे नर-नारियों के लिए घातक हैं और उनमें ईश्वर से मिलाने की और धर्म से साक्षात्कार कराने की शक्ति नहीं है। भगवान विष्णु की नवधा भक्ति चारों वर्णों को समान लाभ देती है और हिंदू धर्म में आस्था निश्चय उत्पन्न करती है क्योंकि कल्कि भगवान महाराज हिंदू धर्म की स्थापना के लिए आ रहे हैं। प्रत्येक बूढ़े से लेकर बच्चे तक शूद्र से लेकर ब्राह्मण तक, प्रत्येक नर-नारी में पुराणों में वर्णित हिंदू धर्म की धाक का जमाना ही कल्याणकारी और उपयोगी है। यह ही सच्चा मार्ग तुलसीदास जी ने, जगतगुरू रामानुजाचार्य जी ने शिवाजी मराठे के गुरू श्री समर्थ रामदास जी ने, बंगाल के श्री रामकृष्ण परमहंस ने और 20 वीं सदी के सन् 1920 तक हनुमान के अवतार गुरुवर बालमुकुन्द जी ने बताया और कल्कि भगवान का दिया हुआ मेरा भी अनुभव है।

कल्कि अवतार अंग्रेजी का घोर शत्रु क्यों?

या

भारत की शत्रु पाश्चात्य दानवता

धर्म-कर्म की शत्रु, परलोक के विश्वास का प्राणियों में अंत करने वाली, भारतवर्ष के आबाल वृद्ध बनिता, सबके चरित्र का विनाश करने वाली, परलोक का लोप करने वाली, अर्थ धर्म काम मोक्ष में से धर्म और मोक्ष को हटा कर केवल अर्थ और काम में भारतवासियों को बंदी बनाने वाली, परलोक और ईश्वर के ज्ञान में असमर्थ करने वाली, खाली भोग लिप्सा जिभ्या और उपस्थ के भोगों में रुचि भड़काने वाली, मनुष्य से पशु बना देने वाली, ब्राह्मणों को धर्म से गिराकर बूचड़ बना देने वाली, भोगों की लालसा लिप्सा में लालायित बना देने वाली, जब अंग्रेजी माया ने भारतवर्ष में अपना पदार्पण किया और जिस देश से वह राक्षसी माया आई उस देश के निवासियों ने जैसे कोई अंजाने में विष खाले, तो भी विष अपना प्रभाव करता है उन्होंने भारतवर्ष में केवल अपना आधिपत्य ही

नहीं जमाया वरन् दही के धोखे में चूना खा गए और क्षीरसागर वासी महाविष्णु का द्रोह करके उन्होंने अपने महाविनाश का बीज बो लिया। वह अंग्रेज डा. सर टॉमस रो जिस को वर्तमान का संसार देशभक्त और त्यागी और महात्मा मानता है जिसने अंग्रेजी माल पर टैक्स न लगने का वरदान मुसलमान शासकों से माँगा था और तिजारत के लिए कोठियां बनाने के लिए जमीन माँगी थी वह अंग्रेज जाति का घोर शत्रु प्रमाणित हुआ और उसके हाथों से अंग्रेज जाति का वह सर्वनाश हुआ जैसे बाप के हाथ से बेटा अनजाने में मारा जाए।

भारतवर्ष में अंग्रेजों ने आधिपत्य जमाते ही हिंदू धर्म के साथ क्या क्या शत्रुता करी। यहीं के टैक्सों की आमदनी से, भारतवर्ष को हमेशा से हमेशा तक अपने अधिकार में बनाए रखने के लिए यहाँ इसाई मिश्नरियों के द्वारा अपने धर्म का प्रचार किया और भारतवासियों को हिंदू धर्म से घृणा दिलवाई। भारतवर्ष का त्याग और तपस्या द्वारा परलोक और ईश्वर का ज्ञान कराने वाला मार्ग सुखों और भौतिक प्रलोभनों को दे देकर भारतवासियों से छुड़वा दिया गया। धर्म कष्ट से प्राप्त होता है और अध:पतन सुखों से प्राप्त होता है इसलिये भोली भाली जनता को गिरने में देर नहीं लगी।

अपनी जड़ें सुदृढ़ करने के लिए इन्होंने अत्यंत निर्मूल, नितांत झूठ आदिवासी का विचार जान बूझ कर भारतवर्ष में लगातार स्कूलों और कॉलेजों के द्वारा भारतवर्ष की संतानों में भर दिया और मूर्ख बनाकर एकदम गधों की तरह हांक दिया और सब आजतक गधों की तरह हके चले जा रहे हैं और पीछे मुड़ कर देख भी नहीं रहे हैं।

उन्होंने फूट डालने के लिए शोषक व दलित वर्ग का सिद्धांत प्रस्तुत किया और अपने स्वार्थ के लिए निर्दयता से दीर्घकालीन शत्रुता का बीज बो दिया। ब्राह्मणों ने आखिर तक अंग्रेज के खान पान, वेश भूषा व चाल चलन व शिक्षा का विरोध किया और सबकी दृष्टि में बुरे बनकर भी अंग्रेज के संसर्ग से विमुख और दूषित हुए वे हिंदू समाज को अध:पतन से बचा न सके। यदि ब्राह्मणों के ऊपर विश्वास करके अंग्रेज की प्रत्येक वस्तु को अस्पृश्य समझ कर त्याज्य समझा जाता तो अंग्रेज का व्यापार भारतवर्ष में जड़ें न जमा पाता और इंग्लैंड शस्त्र अस्त्रों की उन्नति न कर पाता। इस घर को आग लग गई घर के चिराग से,

भारतवासियों ने अंग्रेजी माया की चकाचौंध में फंस कर ब्राह्मणों से विद्रोह किया और धर्म की आज्ञाओं का अविश्वास किया और मक्खी जैसे मकड़ी के जाले में फंस जाती है इसी प्रकार साधनशील और संतोष को त्याग कर कुत्ता जैसे रोटी पर लपकता है ऐसे अंग्रेजों के पराधीन हो गए और भारत के शत्रुओं की उन्नति में साधन और सहायक बन गए। भारतवर्ष के और अपने और अपनी संतानों के और अपनी संस्कृति के शत्रुओं के चंगुल में फंस गए

और अपना सर्वस्व खो बैठे और अपने विनाशकारियों की उन्नति में साधन और सहायक बन गए। लार्ड मैकाले ने भारत में सर्वप्रथम भारत के नवयुवकों में पश्चिमी सभ्यता के प्रचार के लिए और भारतवासियों के मन से ब्राह्मणों के धर्म के प्रभुत्व और प्रभाव को नष्ट करने के लिए यूनिवर्सिटियों की नींव डाली। उसके ये शब्द थे, ''ब्राह्मण हमारे घोर शत्रु हैं जब तक हम इनके प्रभाव को नष्ट नहीं करेंगे और भारतवर्ष की संतानों में तर्क से प्रत्येक बात समझाने की और ग्रहण करने की प्रवृत्ति पैदा नहीं करेंगे हमारी जड़ें नहीं जम सकतीं।'' इसलिए ब्राह्मणों से और हिंदू धर्म से अरुचि और द्वेष फैलाने के लिए उत्पन्न करने के लिए अंग्रेजी शिक्षा प्रचलित की गई। उसी का प्रमाण स्वामी विवेकानंद हैं जो धर्म की मजाक उड़ाया करते थे और अंततोगत्वा प्राचीन पद्धति के अनुसार साधन संपन्न श्री राम कृष्ण परमहंस के हाथ से ही अंग्रेजी माया रूपी मगरमच्छ के मुँह से उनका उद्धार हुआ नहीं तो खाए गए थे इसमें संदेह नहीं है।

उसी का दूसरा ज्वलंत प्रमाण मैं हूँ। अंग्रेजी शिक्षा पढ़ते-पढ़ते मेरा भी मस्तिष्क दूषित हो रहा था परंतु पुराणों की पद्धति में वर्णित श्री कल्कि भगवान महाराज के अवतार के पूजन और नाम जप की महिमा से सम्पन्न महर्षि बालमुकुन्द जी महाराज के द्वारा प्रत्यक्ष अनुभूतियों के द्वारा मेरा उद्धार हुआ।

ब्राह्मणों का जमाना जो सीमित बताया जा रहा है वो भी नितांत असत्य है। मनुष्य की पैदाइश बंदरों से बताई जा रही है ये भी सरासर मिथ्या है और वेदों की उत्पत्ति का समय कोई 6000 वर्ष कह रहा है ये सरासर झूठ है। वेद और ब्राह्मण अनादि काल से भगवान के प्यारे हैं। जो कुछ भी धर्म पर संकट आए वे सब प्राणियों की परीक्षा है वे इसलिए नहीं कि धर्म असम्माननीय था। इन्होंने हमारी विचारधाराओं को हटाकर अपनी पथभ्रष्ट करने वाली नारकीय भौतिक विचारधाराएं जो मनुष्य जाति को कोई देवत्व प्राप्ति कराने और परलोक का ज्ञान कराने में लाभकारी और उपयोगी नहीं उनको ठूंस-ठूंस करके हमारी संतानों के मन दूषित कर दिए और उनके आचार की हत्या करके उनकी हत्या कर दी। आज वो समय आ गया है कि ईश्वर ही स्वयं जिसको अलौकिक और दिव्य ज्ञान देकर और उसके अंदर अपने तेज का समावेश करके न भेजे तो इस समय की विद्याएं ईश्वर के ज्ञान से व परलौकिक ज्ञान में अंधे और लंगड़े ही उत्पन्न कर सकती है। आज की सृष्टि पशु व पक्षियों से भी बदतर हो चुकी है।

जे नर राम नाम नहीं लेनदे,
ते नर कूकर शूकर खर सम।

स्वामी रामतीर्थ

हमारे हिंदू धर्म के, 24 अवतारों को जैनियों के 24 तीर्थंकरों की नकल बताकर उपहास

किया जा रहा है और आगे आने वाली संतानों के लिए ऐसे गंदे साहित्य का सृजन कर दिया कि हिंदुओं का इतिहास ही नहीं है। ये 18 पुराण, ये महाभारत, ये हमारे इतिहास ही तो हैं। कुत्ते और बिल्लियों को हमारे इतिहास में स्थान नहीं। हमारा इतिहास यति-सति, पतिव्रता, शूरमा, दानी और भक्तों का इतिहास है। यही हमारी संस्कृति है यही हमारा सर्वस्व है। हमारा इतिहास हमारे यहाँ की देवियों को क्षमा-शील संतोष की मूर्तियाँ, लक्ष्मी, पार्वती, दमयंती, सावित्री, रानी झांसी, अहिल्या बाई, रानी भवानी, इनकी प्रतिमूर्ति बनाता है। इन्हीं के पाठ से भगवान विष्णु प्रसन्न होते हैं। विदेशी विधर्मी जातियों ने हमारे इसी उज्ज्वल ध्येय पर कुठाराघात किया और ऋषियों की तपोभूमि, यज्ञभूमि, ब्रह्मावर्त, अजनाभवर्ष और भारतवर्ष को विषयी, लोभी, लालची और जिभ्या के स्वाद के लिए गिद्धों की तरह परमांसाहारियों तथा वेश्याओं की संतानों जैसे प्राणियों से भर दिया। ये सब कलियुग के सैनिक सिद्ध हुए। जिस प्रकार उत्थान के शिखर पर चढ़े बिना अधःपतन का गर्त दिखाई नहीं देता। इसी प्रकार बिना कल्कि भगवान के दिए हुए दिव्य ज्ञान के इस झूठ और सत्य का निर्णय होना असंभव था। आज जो बात मैं लिख रहा हूँ श्री कल्कि भगवान के बल पर और कल्कि भगवान के नाम की महिमा से दी हुई दृष्टि के बल पर लिख रहा हूँ। ये परम सत्य और ध्रुव सत्य है। ये सत्य की चरम सीमा है। जिस प्रकार उदयाचल पर प्रगट हुए भगवान भास्कर से दिशाओं का ज्ञान होता है उसी प्रकार भगवान कल्कि ने स्वयं अनुभव देकर यह सत्य सिद्ध कर दिया है कि ब्राह्मण पृथ्वी के देवता हैं और श्री रामचंद्र जी, कृष्ण भगवान जिनको ब्राह्मणों ने ईश्वर का अवतार बताया है और जो कुछ धर्म ग्रन्थों में कल्याणकारी धर्म के सिद्धांत बताए हैं वे मिथ्या नहीं हैं वे शाश्वत सत्य हैं।

शुधा सराहिय अमरता, गरल सराहिय मीच

तुलसीदास

अंग्रेजी माया ने अपना काम किया। जो काम मुसलमान शासक 900 वर्ष में न कर पाए वह काम अंग्रजों ने 150 साल में कर दिया और अब भी अपने उत्तराधिकारी शिष्यों द्वारा करा रहे हैं। वर्तमान काल के सुधारवादी नेतागण और हिंदू धर्म में दोष दृष्टि रखने वाले प्राणी अंग्रेजी माया की ही पैदावार हैं, अतएव ये सब कलियुग के सैनिक हैं। इन सबके हृदय का भाव मदिरा की दुर्गंध की तरह गौ ब्राह्मणों के विद्वेष के रूप में प्रगट हो रहा है। ये अंग्रेजी माया की देन है। अंग्रेजी शासन ने भारत की संतानों के मन से परिवार पोषण धर्म का सम्मान, माता पिता का सम्मान सदग्रंथों के सम्मान की भावनाओं को हटा दिया और इतना संकुचित और संकीर्ण कर दिया कि अपने अर्जन किए हुए धन को, इनकी सेवा में लगाने से विमुख कर दिया। हमारे व्यापार पर अधिकार किया, दस्तकारियों पर अधिकार

किया, किसान की सारी कमाई पर अधिकार किया अंत में खेती के धंधे पर कब्जा करने वाले थे और भारतवर्ष को एक जेलखाने की तरह कैदियों की तरह खाली रोटी व लंगोटी, तोल तोल कर सात-सात छटांक रोटी और नाप-नाप कर जेलखाने के बंदियों की तरह कपड़ा देकर सारी कमाई इंगलैंड भेजने का विचार कर ही रहे थे कि ऐसा हिंदू जाति और हिंदू धर्म के सर्वनाश का उपक्रम देखकर इस देश के सच्चे स्वामी हिरण्याकश्यप के मारने वाले, रावण व कंस के मारने वाले गौ ब्राह्मण और धर्म की रक्षार्थ युग-युग में अवतार लेने वाले क्षीरसागर वासी महाविष्णु गोपाल कृष्ण ने कल्कि रूप के धारण करने का संकल्प करके, श्री बालमुकुन्द जी के रूप में ब्राह्मण के घर हनुमान जी को जन्म दिया और अपने अवतार धारण करने की रहस्यमयी लीला का उन्हें अनुभव दिया और कलियुग की बची-खुची शेष आयु को काटने के लिए कल्कि भगवान का पूजन व नामोच्चारण और प्रचार करने का आदेश देकर कल्कि भगवान के उस नूतन आश्वासन की प्रसन्नता का नगाड़ा बजवाया और भारतवर्ष के महा-महिमापूर्ण प्राचीन तीर्थ पद्मपुराण में वर्णित इन्द्रप्रस्थ में हनुमान जी के द्वारा कल्कि भगवान की मूर्ति के पूजन का श्रीगणेश करवाया। संस्कारी भक्तों को प्राचीन पूर्व जन्मों के नाम बताकर और उनमें प्रेम का संचार करके मालाएं जपवाईं।

पुराणों पर ही मैं विशेष जोर क्यों दे रहा हूँ कल्कि अवतार या राम व कृष्ण अवतार की पूजा के बारे में जितना स्पष्ट निर्देश पुराणों में है जिनसे मुझे दैवी अनुभव हुआ वो वेदों में उस प्रकार से स्पष्ट वर्णित नहीं है। पुराणों की बताई हुई पूजन विधि से ही लोक परलोक वैकुण्ठ स्वर्ग आवागमन पित्रों के श्राद्ध, पुनर्जन्म का ज्ञान हिंदू धर्म की सत्यता का प्रत्यक्ष अनुभव हुआ और उससे सबसे बड़ी बात मिली कि वह प्राचीन ध्रुव प्रह्लाद का प्यारा धर्म ही नारायण को अत्यंत प्रिय है। उनका ही अपना धर्म है उनका ही अपना देश है यहां वे स्वयं अवतार लेकर आते हैं। उसको छोड़ करके, उस धर्म के महत्व को कम करने के लिए जिन जिन लोगों ने उपासना की पद्धतियां व मुकाबले के लिए नये नये धर्म चलाए वह सबसे बड़ी भारी मूर्खता हुई। सुधार के नाम पर जो जो भी किया गया वह प्राणियों के हित पर कुठाराघात ही हुआ। ये सब लोग सन्माननीय, अनादि अनंत वात्सल्यभाव परिपूर्ण जीवों के अनादि उद्धारकर्त्ता नारायण विष्णु की भक्ति से और विनीतता से सम्मान और भय से प्राणियों को दूर हटाते गए। कर्मकांड की शोभा से परिपूर्ण पूजन का, कर्म धर्मों का लोप करते चले गए।

दम्भीन निज मत कल्प कर, प्रगट कीन्ह बहु पंथ।

तुलसीदास

कल्कि भगवान का पूजन और जप भारतवर्ष में से अंग्रेजी राज्य को हटाने के लिए और हिंदू

धर्म की स्थापना के लिए किया गया। कल्कि भगवान ने जितना भी कुछ जिसके द्वारा किया गया उस पर अपनी सही की मोहर लगा दी। इस प्रकार कल्कि भगवान का व भक्तों का गूढ़ रहस्यमय सम्पर्क स्थापित हुआ। अनुभव द्वारा भक्तों को विश्वास देकर नए सिरे से भक्ति सिखाई व करवाई गई और तत्काल हाथों हाथ फल मिलता गया, जिससे भक्तों में विश्वास बढ़ता गया। अंग्रेजी राज्य चला गया। नेताओं ने हिंदू धर्म के साथ दगा करी और सर्वप्रथम उसी को नष्ट करने के लिए सारी शक्ति लगा दी। ब्राह्मणों को दृष्टि से गिराया गया। गऊएं मारी गईं। बूचड़खाने बढ़ाए गए। कला के नाम पर नैतिकता विरोधी तत्वों को उकसाया गया। रजोगुण तमोगुण को बढ़ाकर सतोगुण को हटाया गया। क्षमाशील संतोष को हटा कर भोग विलास की प्रवृत्ति को भड़का दिया गया। धर्म को व्यर्थ और प्रगति में बाधक समझा गया। इधर कल्कि भगवान का अवतार हो चुका, भक्तों में उनके अनुभव आ चुके प्रकाश और दृढ़ता कल्कि भगवान ने भक्तों को प्रदान कर दी। अपने नाम प्रचार व घोषणा के लिए हुक्म दिए। दूसरी तरफ साथ ही साथ अनेक प्रकार के मत मतांतरों के गुरुओं ने और गुरु बनने की इच्छा वालों ने संसार भर के गुरुओं के और शिष्यों के परम पूजनीय युगांत के अंतिम अवतार श्री कल्कि भगवान का प्राणियों को भजन नहीं करने दिया। अपने अपने दायरे में, कटघरों में मवेशियों की तरह स्त्रियों और पुरुषों को घेर घेर कर दुकानदारियाँ सी बना-बना कर बैठ गए। ये बड़ा भद्दा काम हुआ। कल्कि भगवान के प्रगट होने के बाद जो ग्रंथ लिखे जाएंगे उनमें ये भी एक आश्चर्य लिखा जाएगा कि जब कल्कि भगवान का अवतार हुआ तो कलियुग के गुरुओं ने चेलों को कल्कि भगवान का भजन नहीं करने दिया। ऐसा घोर समय आया कि जिनको कल्कि भगवान ने पुकार के लिए नियुक्त किया उनके अतिरिक्त किसी ने कल्कि अवतार कीपुकार की भी आवश्यकता न समझी जो कि अनिवार्य थी।

जेहि राखे रघुबीर ते उभरे तेहि काल में।

तुलसीदास

स्त्री शिक्षा और बालकों की शिक्षा का ध्येय क्या होना चाहिए?

यदि हमें जगत में भगवान के प्यारे प्राणी बनाने हैं तो हमें यह ध्येय सामने रखने होंगे। यति, सति, शूरमा, दानी और भक्त ये ही भगवान के प्रिय हो सकते हैं ये ही संसार के रत्न हैं इन्हीं से संसार का कल्याण हो सकता है। मेरा अपना भी अनुभव है और इतिहास भी साक्षी है कि महापुरुषों के जीवन निर्माण में माताओं का बड़ा हाथ रहा है। अंग्रेजी या पाश्चात्य शिक्षा ने जिसमें कोई साधन नहीं है, न वह कोई योग का मार्ग ही है, धर्म और मोक्ष के ज्ञान से शून्य मनुष्यों को कुत्ता व बिल्ली बना दिया है। कुत्ता व बिल्ली बनाने वाले ही, साहित्य का सृजन हो रहा है। ऐसे गंदे वातावरण में लड़के व लड़कियों को सहशिक्षा न देकर अलग अलग रखते

हुए धार्मिक शिक्षा अनिवार्य होनी चाहिए। उसमें हमें रामायण, महाभारत और पुराणों की कथाओं से ही सहायता मिल सकती है और उन्हीं की शरण में जाना चाहिए। जिनमें स्त्रियों को देवी और मनुष्यों को देवता बनाने की सामर्थ्य है।

संस्कृत विद्या पढ़ना हमारा ध्येय होना चाहिए। वेद पुराण एवं शास्त्रों की अनिवार्य शिक्षा के साथ साथ उनमें विश्वास का पोषण और परिपुष्ट करने वाली भगवान श्रीमन्नारायण महाविष्णु की शिक्षा की भी परम आवश्यकता है। इन शास्त्रों की शिक्षाओं में विश्वास बढ़ाने वाला अलौकिक प्रकाश श्रीमन्नारायण की नवधा भक्ति के बिना प्राप्त नहीं होता
अत: प्रत्येक बालक व बालिका को यदि दो घंटे अध्ययन में लगें तो दो घंटे जप अवश्य करना चाहिए। इसके बिना इन सारे शास्त्रों में प्रत्यक्ष विश्वास व अनुभूति सहज में नहीं होती, बड़ा कठिन कार्य है क्योंकि जिस प्रकार स्वरों की सहायता के बिना व्यंजनों का उच्चारण असंभव है उसी प्रकार बिना भगवान की भक्ति के धर्म, ज्ञान, वैराग्य और ध्यान कोई भी सुंदर वस्तु स्थाई और एकरस रह नहीं सकती।

श्री कल्कि नाम की महिमा

कल्कि भगवान के नाम की महिमा वर्णनातीत व इंद्रियातीत है ब्रह्मसुख का भोग कराने वाली, स्वरूप का ज्ञान कराने वाली, जीवन मुक्त कराने वाली, शक्ति मुक्ति महारानी के दर्शन कराने वाली, जीवों को बाँधने वाली, माया के दर्शन कराने वाली और गौ ब्राह्मणों के बैरियों को विध्वंस करने के लिए, पृथ्वी का भार उतारने के लिए, अग्नि की तरह भड़कती हुई, नवीन शक्तियों का सृजन करने वाली, भगवान के चरणों में तल्लीनता व तन्मयता देने वाली, कल्कि भगवान की सत्ता से विकारमयी जीव सत्ता को दमन करने वाली, भक्तों के हृदय में, खंभ में नरसिंह भगवान की तरह सत्ता स्वरूप से समा जाने वाली, ध्रुव सत्य सत्ता स्वरूप दण्डायमान हो जाने वाली, अपने में भक्तों की प्रवृत्ति को प्रचंड अग्नि की तरह भड़का देने वाली, नारायण की छाती से लगा देने वाली, नारायण के चरणों में हठात् व बलात् लगा देने वाली, हमेशा से हमेशा के लिए भगवान का बना देने वाली, अगले जन्म के भगवान के सम्बन्धों को उद्दीप्त व प्रकाशमान कर देने वाली, उत्सुकता व आतुरता से भरी भगवान के सगुण रूप की विरह व्यथा को जागृत कर देने वाली, संसार की प्रत्येक वस्तु से अनुराग और प्रेम छुड़ा कर भगवान की दास्य अभिलाषा को ही अखंड ज्योति की तरह जगाए रखने वाली, 4 लाख 32 हजार वर्ष के कलियुग की आयु काट कर सूली का काँटा बना देने वाली, अंधेरे में उजाला, निराशा में आशा, असफलता में सफलता जंगल में मंगल करने वाली सम्यक् प्रकार से समस्त क्लेशों को भस्म करने वाली प्रचंड अग्नि स्वरूप और आंतरिक व अंतरंग भक्तों के लिए शांतिमयी, वात्सल्यमयी, समृद्धिमयी, माता की तरह भक्ति भावों और आंतरिक सुखों को और ब्रह्मी स्थिति की पोषणा करने वाली, धारण करा देने वाली, जातिस्मर बना देने वाली, भक्तों की जीवन यात्रा को चलाने वाली, सत्संग व सत्पुरुषों में रुचि पैदा करने वाली है।

आगे क्या कहें भगवान का नाम

हृद्यं गुप्तं रसं हृअजीण शमकम
नित्यं हितं शीतलं लध्वच्छं
रसकारकम निगदितम् पीयुष बडवज्जीवनम्